विश्व स्नेह समाज

o"kZ 20] vad 01] vDVwcj 2020

तृतीय काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एच रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkbZ,u 0553875

विषय : पर्यावरण एवं प्रकृति

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०ः
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:20, अंक: 01

अक्टूबर : 2020

संस्थान सदैव गतिशील है हिन्दी के लिए: पठाण 6

अरथु अमित अति आखर थोर ....--9

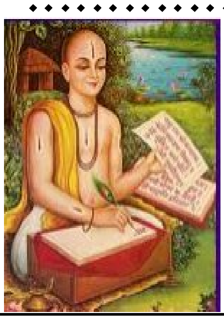

इस अंक में......

LFkk;h LrEHk

अपनी बात: तकनीक ने हिन्दी की बिंदी को चमकाया..............04

रावण से पूर्व बालि 11

प्रेरक प्रसंग 14

सोशल मीडिया से 15

ये आग कब बुझेगी 16

`dfork,@xhr@xty% डॉ0 मुक्ता कौशिक, डा. मंजु रुस्तगी, शबनम शर्मा, बलवंत, डॉ0 पूनम माटिया,, लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर', डॉ0 हितेश कुमार शर्मा, डॉ0 अरुण कुमार आनंद, डॉ0 ज्योति जैन 18–20

dgkuh% आराधना, स्टार 21, 27

साहित्य समाचार, ...8,17

y?kq dFkk,% शबनम शर्मा, श्री सीताराम गुप्ता, रोहित यादव,..25

LokLF;% कावाकल्प अमृत है, भवूर शिखा एवं पलांश 29

समीक्षा: 31

मुख्य संरक्षक

श्री बुद्धिसेन शर्मा

lj{kd lnL;

श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक

श्रीमती जया

foKkiu izca/kd

महेन्द्र कुमार अग्रवाल

C;wjks

ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी

निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालय:

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 dkO% 09335155949

b&esy% vsnehsamaj@rediffmail.com

lHkh in vojSrfud gSa

पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।

प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380,

सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है.
स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

ukV% पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

तकनीक ने हिन्दी की बिंदी को चमकाया

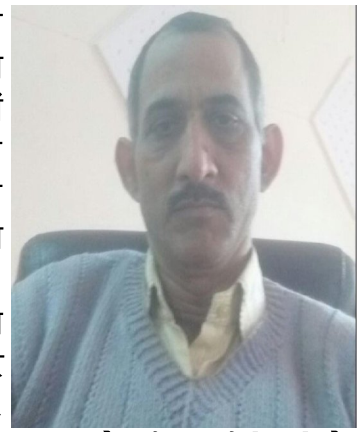

हर देश और हर भाषा के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जो उन्हें चिर काल के लिए बदल देते हैं. विभिन्न स्तर पर प्रयास चलते रहते हैं कि अंग्रेजी के हौवे को थोड़ा कम कर और इस भाषा की पकड़ को तनिक ढीलाकर भारतीय भाषाओं को आगे लाया जाए. उग्र राजनीति के इस युग में हिंदी के मसले पर राष्ट्रीय सहमति बन पाना लगभग असंभव दिखता है, लेकिन हिंदी और साथ ही अन्य सभी भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल क्रांति एक मौका है जिसे यदि पकड़ लिया जाए तो निश्चित रूप से एक बड़ी छलांग लगाई जा सकती है.

टेक्नोलाजी वह चीज है जिसके दम पर पिछलग्गू भी एक क्षण में कतार में सबसे आगे आ खड़ा हो सकता है. तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास और विस्तार हुआ है, लेकिन तकनीक के क्षेत्र में हिंदी की स्थिति कोई बहुत बेहतर नहीं. हालांकि आज कई एप्प अपने आप को हिंदी में ला रहे हैं. ये मुख्यतः बैंकिंग, यात्रा और ई-कामर्स से जुड़े हैं. कोरोना काल में नई तकनीक ने हिन्दी को बढ़ावा देने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है. ऑन लाईन पुस्तकों के प्रकाशन ने जहां एक तरफ पाठकों तक पहुंच को आसान एवं सरल बनाया है वहीं दूसरी ओर नवलेखकों को कम लागत में अपनी पुस्तकें तैयार करवाने में काफी सहूलियत मिली है. एक तरफ कवि सम्मेलन, सेमिनार बंद हुए तो ऑन लाईन कवि सम्मेलनों ने काव्य प्रेमियों को जीवंत रखा. सेमिनार के बदले वेबिनारों ने अपनी धूम मचाए रखी. यू-ट्यूब, ब्लाग, फेसबुक, ह्वाटसएप भी कुछ खामियों के बावजूद कहीं न कहीं हिन्दी को आम आदमी तक सुगम, सरल तरीके से पहुचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है.

लेकिन साथ में यह भी उल्लेख करना समीचीन होगा कि ये सभी माध्यम कहीं न कहीं अंग्रेजियत को धारण किए हुए है. इनमें हमें कहीं न कहीं अंग्रेजी का सहारा लेना पड़ता है. इसके लिए भारतीय भाषाओं में एक भारतीय इंटरनेट का निर्माण करने की आवश्यकता है ताकि उसका स्वरूप भारत की भाषाओं की विशेषता के हिसाब से हो. ऐसे उपायों से ही हिंदी का सही मायनों में विकास हो सकेगा और उसका दायरा और व्यापक हो सकेगा. इस मामले में सरकार एक सीमा से ज्यादा कुछ नहीं कर सकती. स्पष्ट है कि हिंदी समाज को ही जिम्मेदारी लेनी होगी.

भारत की जनसंख्या का जो सात-आठ प्रतिशत अंग्रेजी बोलता है वह आनलाइन हो चुका है. शेष जो आनलाइन हो रहे हैं वे भारतीय भाषा भाषी हैं. शायद इनके लिए कोई एप्प विकसित करना एक व्यावसायिक विफलता हो. ऐसे में यह जिम्मेदारी उन हिंदी भाषियों की है जो पहले से आनलाइन हैं और अंग्रेजी में सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं. उन्हें नए उत्पादों की मांग करनी चाहिए. इसमें केंद्र सरकार से ज्यादा जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है जो हिंदी में बाजार खड़ा करने का एक वातावरण तैयार कर सकती है. सबसे पहले सभी छात्रों को हिंदी टाइपिंग अनिवार्य रूप से कक्षा 10 के पहले सिखाई जानी चाहिए. अंग्रेजी में टाइप करना तो बच्चे आज जल्दी ही सीख लेते हैं, पर हिंदी अगर मजबूरी न हो तो कभी नहीं सीखेंगे. हिंदी में साफ्टवेयर निर्माण के लिए थोड़ा जोर लगाने की जरूरत है. सरकार की भूमिका सिर्फ प्रोत्साहन देने तक की हो सकती है. हिंदी में साफ्टवेयर बनाने के लिए थोड़े से वित्तीय संसाधन और कुछ हिंदी प्रेमी तकनीकी दक्ष युवा पर्याप्त हैं. ध्यान रहे कि आज ऐसे दक्ष युवाओं की कोई कमी नहीं है.

आज हिंदी की एक ही समस्या है कि हिंदी वालों के लिए निजी क्षेत्र में ज्यादा पैसे वाली नौकरियां नहीं हैं. इसका एक मुख्य कारण ऐसी नौकरियों का बडे शहरों में केंद्रित होना है. हिंदी को आगे बढ़ना है तो पहले हिंदी में चलने

वाले उद्योगों जैसे-मनोरंजन, कला, समाचार, धारावाहिक और रेडियो का संपूर्ण हिंदीकरण करना होगा. आज इनमें से किसी के लिए भी आपको किसी खास जगह होने की आवश्यकता नहीं है. आज मनोरंजन, समाचार, धारावाहिक आदि यू-ट्यूब पर ज्यादा देखे जाते हैं. छोटे शहरों के हमारे होनहार यू-ट्यूब पर सेलिब्रिटी बन चुके हैं, लेकिन प्रसिद्ध होने के बाद कूल होने के लिए वे अंग्रेजी के पीछे भागते हैं. यू-ट्यूब उनसे हिंदी में बात नहीं करता. वहां टिप्पणी भी रोमन हिंदी में ही आती है. इसका जवाब यू-ट्यूब का हिंदीकरण नहीं, बल्कि हिंदी का अपना यू-ट्यूब होना है जहां हिंदी में लिखा जाना ही कूल समझा जाए. बस एक तकनीकी सफलता चाहिए और फिर हिंदी छलांग लगाती दिखेगी. वैश्वीकरण के जमाने में सरकार से यह उम्मीद करना ठीक नहीं कि वह फेसबुक, यू-ट्यूब ट्विटर की अनदेखी कर दे या फिर चीन की तरह रवैया अपनाए परंतु सरकार तकनीक के क्षेत्र में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन को प्राथमिकता तो दे ही सकती है.

शिक्षा के क्षेत्र में मशीन लर्निंग द्वारा संसार का सारा ज्ञान हमारी भाषा में आसानी से उपलब्ध कराया जा सकता है और अच्छे षिक्षक एक जगह पर होते हुए भी लाखों छात्रों द्वारा देखे-सुने जा सकते हैं. यदि यह मौका छूटा तो हिंदी हमेशा उपयोग-उपभोग की भाषा बनने के लिए अभिशप्त होगी, जैसे कि आज का बालीवुड, जहां बस बोलने के लिए ही हिंदी है. तेजी से बदल रहे संदर्भों में हमें अपने कान, आंख और दिमाग की खिड़कियां खुली रखनी होंगी तभी युवाओं की अभिलाषा को पूर्ण करने में हिंदी एक सेतु का काम कर सकेगी.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
संपादक

1996 ls =ekfld ,oa 2001 ls ekfld dk :i esa fujUrj izdkf'kr dy] vkt vkSj dy Hkh cgqi;ksxh

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये,
पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन–1500/रुपये, संरक्षक: 11000/रुपये

[kkrk /kkjd– विश्व स्नेह समाज, cSd dk uke: विजया बैंक, [kkrk la[;k–718200300000104, vkbZ,Q,llh dksM–वीजेबी0007182 सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पता: एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेल:
vsnehsamaj@rediffmail.com

अप्रैल से सितम्बर २०२० तक चली विभिन्न ऑन लाइन प्रतियोगिताओं का समापन

संस्थान सदैव गतिशील है हिन्दी के लिएः पठाण

'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ०प्र० एक ऐसा संस्थान है जो हिंदी की सेवा एवं समाज सेवा के कार्यो के लिए निरन्तर क्रियाशील है. संस्थान द्वारा कोरोना काल एवं अपने रजत वर्ष की तैयारी में ऑन लाईन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. जिसमें काव्य, प्रश्नोत्तरी, चित्रकला, गीत, नृत्य, बच्चा पार्टी प्रश्नोत्तरी इत्यादि रहे. काव्य प्रतियोगिता में ब्रिटेन सहित भारत के 12राज्यों के 100 रचनाकारों ने प्रतिभाग किया. कुल छह चरणों में आयोजित प्रतियोगिता में प्रत्येक चरण में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चयनित किए गए. फिर एक से तीन व चार से छह के अलग-अलग तीन-तीन विजेता चयनित हुए. उनमें से सर्वोत्तम तीन के चयन हेतु प्रतियोगिता हुई जिसके विजयी प्रतिभागियों के परिणाम की घोषणा आज की जानी है. उक्त बातें आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० एस.एन. पठान जी कार्यक्रम में परिणाम की घोषणा करते हुए कही. उन्होंने परिणाम विजेताओं

डॉ० एस.एन. पठाण, मुख्य अतिथि

की नाम की घोषणा भी की. श्री नरेन्द्र भूषण, लखनऊ, उ.प्र को प्रथम, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ. प्र को द्वितीय, श्रीमती इंदू बरैठ, कालचेस्टर, ब्रिटेन को तृतीय एवं श्रीमती वंदना श्रीवास्तव को चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ. तीनों विजेता संस्थान की काव्य सम्राट प्रतियोगिता के अंतिम चरण के सीधे प्रतिभागी माने जाएंगे. सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई जो प्रतिभागी कोई स्थान नहीं बना पाए है उनके लिए शुभकामनाएं.

डॉ० अनिता पंडा, विशिष्ट अतिथि

बच्चा पार्टी प्रश्नोत्तरी के परिणाम की घोषणा करते हुए संस्थान की मेघालय से हिन्दी सांसद एवं आज के इस आयोजन की विशिष्ट अतिथि डॉ० अनीता पंडा जी ने कहा-'आज का आयोजन बच्चों को भारतीय संस्कृति के रिश्ते नातों, संगे संबधियों में किससे क्या रिश्ता है, यानि ये रिश्ता क्या कहलाता है से अवगत कराने के लिए पितश्पक्ष काल में 21 दिवसीय बच्चा पार्टी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में एक दिन रिश्तों के बारें में तो दूसरे दिन सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गये. इस प्रतियोगिता में पहले 150 बच्चों ने पंजीकरण करवाया था, 20 बच्चों ने तीन दिन सही जबाब देकर स्थान बनाया। प्रतिदिन सर्वप्रथम 10 सही जबाब देने वाले प्रतिभागियों के नाम चयनित किए गए. कुल 21 दिनों सर्वाधिक सर्वप्रथम सही जबाब देने वाले प्रतिभागियों के आधार पर श्री शुभ द्विवेदी-प्रयागराज, उ.प्र. को प्रथम, कु० प्रज्ञा दीक्षित-फतेहपुर, उ.प्र. को द्वितीय, कु०ऋषिता कुम्भज, शिलांग, मेघालय एवं कु० समृद्धि तिवारी, प्रयागराज, उ.प्र. को संयुक्त रुप से तृतीय, श्री मोक्ष कुम्भज, शिलांग, मेघालय को चतुर्थ, श्री काव्य गोयल मथुरा, उ.प्र. को पांचवा, श्री दिव्याशु बरुआ, तेजपुर, सोमितपुर, असम को छठवां, श्री सौभाग्य तिवारी प्रयागराज, उ.प्र. को सांतवा, कु० समृद्धि अवस्थी, सीतापुर, उ.प्र. को आठवा, श्री तलिन गिरी, प्रयागराज, उ.प्र. को नौवा एवं कु० आन्वी जायसवाल, दुर्ग, छ.ग. को दसवां स्थान मिला. आप सभी बधाई. आयोजन की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के सम्मानित अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख ने सर्वोत्तम तीन प्रश्नोत्तरी के परिणाम की घोषणा करने के साथ आभार व्यक्त करते हुए कहा-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ०प्र० द्वारा ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. श्रीलंका, ब्रिटेन, जापान सहित भारत के 20राज्यों के 3500

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख- अध्यक्ष

प्रतिभागियों ने पजीकरण करवाया. कुल छह चरणों में आयोजित प्रतियोगिता में प्रत्येक चरण में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चयनित किए गए. फिर एक से तीन व 4 से 6 के अलग-अलग तीन तीन विजेता चयनित हुए. उनमें से सर्वोत्तम तीन के चयन हेतु प्रतियोगिता हुई जिसके विजयी प्रतिभागियों के परिणाम की घोषणा आज की जानी है.

इस प्रतियोगिता के भाग्यशाली विजेता है सर्वाधिक उम्र के प्रतिभागी रहे, राष्ट्रपति एवं राज्यपाल से शिक्षक पुरस्कार प्राप्त सेवानिवृत्त शिक्षक सोनभद्र, उत्तर प्रदेश के श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, दूसरे स्थान पर चांपा, जांजगीर, छत्तीसगढ़ के युवा लेखक श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव, तीसरे स्थान पर, बहुमुखी प्रतिभा की धनी, प्रधानाचार्या प्रयागराज, उ.प्र. श्रीमती सपना गोस्वामी एवं प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज की उपकुलसचिव चौथे स्थान पर रहीं.

संस्थान का कुलगीत श्रीमती वंदना श्रीवास्तव 'वान्या' द्वारा प्रस्तुत किया गया. उसके बाद श्रीमती मंजू जायसवाल, दूर्ग, छ.ग. द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया गया. मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० एस.एन. पठाण, पूर्व कुलपति, राष्ट्रसंत तुकदोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र, विशिष्ट अतिथि डॉ० अनीता पंडा कार्यक्रम अधिकारी, आकाशवाणी शिलांग, कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख, पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान एवं सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा किया गया.

अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने कहा 'मां वीणा वादिनी के चरणों में नमन करते हुए आज के आयोजन के मुख्य अतिथि के रूप में हमसे जुड़े हुए डॉ० एस.एन. पठाण, पूर्व कुलपति, राष्ट्रसंत तुकदोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र. आप पूर्व शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा, महाराष्ट्र राज्य, पूर्व उपाध्यक्ष भारतीय सांस्कृतिक संबंधा परिषद, नई दिल्ली एवं सलाहकार विश्व शांति केन्द्र, आलंडी, पूणे महाराष्ट्र जैसे उच्च पदों पर रहने के साथ ही साथ प्रकाण्ड विद्वान एवं सुविद्व वक्ता भी है. आपका मैं विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, हिन्दी मासिक विश्व स्नेह समाज, यू ट्यूब चैनल द हंगामा इंडिया परिवार की तरफ से हार्दिक स्वागत वंदन एवं अभिनंदन करता हूं.

विशिष्ट अतिथि के रूप में शिलांग, मेघालय से संस्थान की हिन्दी सांसद, सुप्रसिद्ध लेखिका एवं शिलांग आकाशवाणी की कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अनीता पंडा जी जुड़ी. आपका संस्थान के ऑन लाइन आयोजन में पूर्वोत्तर क्षेत्र से प्रतिभागियों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है. आपका हार्दिक स्वागत एवं वंदन है.

काव्य प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में शामिल रही डॉ० मुक्ता कौशिक, सहा० प्रोफेसर-ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अभनपुर, रायपुर, छत्तीसगढ़, डॉ० सुषमा कोंडे, सेंट व्हिन्सेंट कॉलेज, पूणे, महाराष्ट्र, डॉ० अल्का प्रकाश, सहायक प्रोफेसर, प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भय्या विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. आप सभी का भी स्वागत वंदन एवं नमन है.

आज के इस आयोजन की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के सम्मानित अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख, पूर्व प्राचार्य, लोकसेवा महाविद्यालय, औरंगाबाद एवं देश की कई सुप्रसिद्ध हिन्दी सेवी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं आपके निर्देशन में ३५ छात्र पीएचडी कर चुके है। आपका हार्दिक स्वागत, वंदन एवं अभिनंदन है.

अप्रैल २०२० के कोरोना काल में प्रारंभ किया लाक डाउन प्रश्नोत्तरी एवं तालाबंदी काव्य प्रतियोगिता ०१ से ०६ तक चले आयोजन में एक से तीन एवं ४ से ६ में उत्तम तीन प्रतिभागियों की अलग से प्रतियोगिता हुई जिसके विजयी प्रतिभागियों में से सर्वोत्तम तीन

निर्णायक मंडलः डॉ० मुक्ता कौशिक, डॉ० सुषमा कोंडे एवं डॉ० अल्का प्रकाश

के चयन हेतु पुनः प्रतियोगिता हुई जिसके परिणाम की घोषणा आज होनी है। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में श्रीलंका, ब्रिटेन, एवं जापान सहित भारत के २३ राज्यों से कुल ३५०० प्रतिभागियों ने पंजीकरण करवाया। इसी प्रकार काव्य प्रतियोगिता में भारत के १८ राज्यों सहित ब्रिटेन के कुल १०० प्रतिभागियों ने अलग-अलग प्रतिभाग किया। आज के विजेता निश्चित ही भाग्यशाली है क्योंकि उन्होंने कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच इस मुकाम पर पहुंचेगे। आज के विजयी होने वाले प्रतिभागियों को अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं।

संस्थान अपना रजत जंयती समारोह अगले वर्ष १५ जून को मनाने जा रहा है। यानि संस्थान अपने २४ वर्ष पूर्ण कर २५वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। संस्थान के विविध आयोजन मई २०२१ तक चलते रहेंगे। सभी भाग्यशाली विजेताओं को भव्य रजत जयंती समारोह में सम्मानित किया जाएगा

हम हिन्दी एवं समाज सेवा के लिए जी जान से तत्पर है और भविष्य में भी और तीव्र गतिसे कार्य करेंगे. हमारा सुक्त वाक्य है चरैवेति चरैवेति। चलते जाओ, चलते जाओ। हम हमेशा चलते रहते है, गति धीमी या तेज हो सकती है। कुछ आर्थिक समस्याएं आती है लेकिन सीमित साधन में भी हम बेहतर करने का प्रयास करते रहते है.

बदलती दुनिया में फिट होने लगे है हम,/थोड़ा ही सही मगर हिट होने लगे हैं हम।

पुन्हा एकदा तुम्ही सर्वानी संस्थेच्या या कार्यक्रमाचे मना पासून स्वागत आणि अभिनंदन केले आहे।

कार्यक्रम का सकुशल ऑन लाईन संचालन संस्थान लखनऊ से हिन्दी सांसद श्रीमती वंदना श्रीवास्तव 'वान्या' ने किया.

अंतरराष्ट्रीय नागरी लिपि कवि सम्मेलन

नागरी लिपि परिषद के स्थापना दिवस पर 'दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन, सनेही मंडल, नोएडा एवं नागरिक परिषद' के संयुक्त तत्वावधान में नागरी लिपि कवि सम्मेलन का आयोजन गूगल मीट परिषद के पूर्व अध्यक्ष डा. परमानंद पांचाल' की अध्यक्षता एवं कवि अटल मुरादाबादी के संचालन में किया गया. परिषद के महासचिव डा. हरिसिंह पाल ने सभी आमंत्रित कविगण एवं अतिथियों का स्वागत किया.

कार्यक्रम में केलिफोर्निया से नागरी लिपि एवं हिंदी की समर्पित सेविका प्रो. नीलू गुप्ता, नारनौल-राजस्थान से फतह सिंह लोढ़ा, पुणे से डा. शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख, महाराष्ट्र से डा. अरुणा राजेंद्र शुक्ला, डा. अशोक द्रोपद गायकवाड, मुंबई से डा. जे. पी. बघेल, चेन्नई से डा. राजलक्ष्मी कृष्णन, प्रयाग से डा. अखिलेश आर्येन्दु, रामबिलास जायसवाल, आचार्य रामेश्वर प्रसाद, डिबाई-बुलंदशहर से डा. रजनी सिंह, उज्जैन से महाकवि गंभीरा, आचार्य अनमोल, डा.बृजपाल संत, कवयित्री सुषमा शैली, जय जय राम अरुण पाल, राम किशोर उपाध्याय, गाजियाबाद से कवयित्री 'शैलजा सिंह', ग्रेटर नोएडा से अरुण कुमार पासवान आदि कवियों ने अपने काव्य पाठ से नागरी लिपि की गौरवपूर्ण स्थित पर प्रकाश डाला.

कार्यक्रम संयोजक हास्य कवि बाबा कानपुरी ने सरस्वती वंदना से काव्य पाठ का शुभारंभ करते हुए नागरी पर कविता सुनाते हुए कहा-'लिपियों में लिपि एक श्रेष्ठ देवनागरी है, पुष्ट शुष्ट लिपि कहे सकल जहान है! ब्राम्ही से ये उपजी है गुरुता विशेष, निज देश व विदेश में इसी का गुणगान है.

मंच संचालन करते हुए कवि अटल मुरादाबादी ने कहा----

'व्यवहारिक भी वैज्ञानिक भी, स्वर संकेतों की पालक भी। पग-पग चलकर संवर्धन से अब मंजिल अपनी पाई है। देवनागरी कहलाई है'।।

डा. रामनिवास 'मानव' ने एक दोहे के माध्यम से नागरी की महिमा का इस तरह बखान किया-'लिखित पठित समरूप है, दृढ़ता का आधार। स्वर व्यंजन संयोग से, धरती रूप अपार।।'

कवि विज्ञान व्रत ने बताया-'देवनागरी है सरल, सब लिपियों में श्रेष्ठ। कोई भी लिपि है नहीं, इसके आगे जेस्ठ है'।

डा. दिनेश चमोला ने नागरी की काव्य मई व्याख्या कुछ इस प्रकार से की----

'संयुक्ताक्षर स्वर व्यंजन जितने, सब वैज्ञानिक रूप विभाजित, प्रतिध्वनि हित लिपि चिन्ह भिन्न हैं, शब्द प्रथक हित वर्तनी है चिन्हित'।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में डा. परमानंद पांचाल' ने कहा 'नागरी लिपि ब्राह्मी से उत्पन्न दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है. इसमें हम जैसा लिखते हैं वैसा ही वैसा ही पढ़ते हैं, जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं. अतः यह सबसे सरल और वैज्ञानिक लिपि है. भारत की अनेक भाषाओं ने इसे अपनाया है. अगर अन्य भाषाएं भी इसे अपनी लिप के साथ-साथ अपनाएं तो यह पूरे देश को एक सूत्र में बांधने में सक्षम है।'

कार्यक्रम के समापन पर नागरी लिपि परिषद के महासचिव डा. हरि सिंह पाल' ने सभी आमंत्रित साहित्यकारों, श्रोताओं के प्रति अपना आभार व्यक्त किया.

अरथु अमित अति आखर थोरे

-गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

पिछली पांच सदियों से भारतीय लोक जीवन में मूल्यगत चेतना के निर्माण में गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरितमानस' का सतत योगदान अविस्मरणीय है. लोक भाषा की इस सशक्त रचना द्वारा सांस्कृतिक जागरण का जैसा कार्य संभव हुआ वैसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता है. 'कीरति भनिति भूति भलि सोई सुरसरि सम सब कर हित होई' की प्रतिज्ञा के साथ कविता को जन-कल्याणकारिणी घोषित करते हुए गोस्वामी जी ने काव्य के प्रयोजन को पहले की शास्त्रीय परम्परा से अलग हट कर एक नया आधार दिया. एक विशाल मानवीय चेतना की परिधि में भक्ति के विचार को जन-जन के हृदय तक पहुंचाते हुए गोस्वामी जी हमारे सामने एक लोकदर्शी दृष्टि वाले कवि के रूप में उपस्थित होते हैं. वे जनसाधारण की 'भाषा' अवधी और भोजपुरी का उपयोग करते हुए जीवंत भंगिमा और ग्राम्य परिवेश के बीच जीवन के सत्य की एक असाधारण और अलौकिक, पर हृदयग्राही छवि उकेर सके थे. उनके शब्द-चयन में एक ऐसी दुर्निवार किस्म की संगीतात्मकता और ऐसी लय है कि पढिए तो (बिना अर्थ समझे भी!) उसे गाने और झूमने का मन करने लगता है. पारिवारिक जीवन, मित्रता, सत्संगति, सामाजिक जीवन और राजनय जैसे विषयों को समेटते हुए लोक में रमते हुए तुलसीदास जी ने लोकोत्तर का जो संधान किया उसमें एक ओर यदि दर्शन की ऊंचाई दिखती है तो दूसरी ओर रस की गहरी और स्निग्ध तरलता भी प्रवाहित होती मिलती है. विष्णु के अवतार श्रीराम के लीला-काव्य में सशक्त भाषा और शब्द-प्रयोग का यह अद्भुत जादू ही है कि उनके दोहे और चौपाइयां शिक्षित और गंवार सभी तरह के लोगों की जुबान पर आज भी छाए हुए हैं और प्रमाण और व्याख्या के रूप में उद्धृत होते रहते हैं और उनकी कथा के नाना संस्करण प्रचलित हैं. उनकी रचनाओं का विश्लेषण अनेक दृष्टियों से किया गया है. विशेष रूप से धर्म (हिंदू!) के उन्नायक!, लोक मंगल

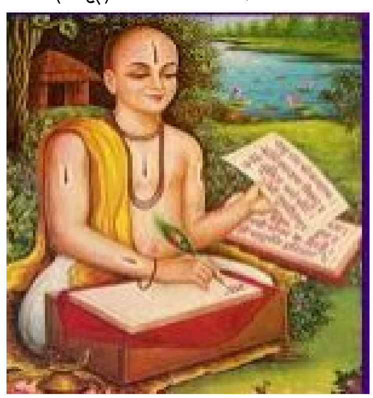

के प्रतिष्ठाता, राजनैतिक माडल के प्रस्तोता (राम राज्य!) और काव्य-शास्त्र की उपलब्धि आदि के कोणों से अध्येताओं ने विचार किया है और दोष-गुण का काफी पर्यालोचन किया है. पर एक पाठक को उनकी सीधे- सीधे सम्बोधित करती है. मानस को पढ कर या उसकी कथा को सुन कर चित्त उद्वेलित बिना नहीं रह सकता है.

यह गोस्वामी जी की रचनात्मक प्रतिभा ही थी कि अनेक वृत्तों में अनेक वक्ताओं द्वारा कही गई जन्म जन्मांतरों को समेटती हुई राम-कथा ऐसे मनोरम ढंग से प्रस्तुत हुई कि वह जन मन के रंजन के साथ ही भक्ति कि धारा में स्नान कराने वाली पावन सरिता भी बन गई. मानस में पहले से चली आ रही राम-कथा में कई प्रयोग भी किए गए हैं और ब्योरे में जाएं तो उसकी प्रस्तुति पर देश-काल की अमिट छाप भी पग-पग पर मिलती है. कई-कई तरह के संवादों के बीच गुजरती हुई राम-कथा काव्य शास्त्रियों के लिए इस अर्थ में चुनौती भी देती है कि वह प्रबंधकाव्य के स्वीकृत रचना विधान का अतिक्रमण करती है. राम मय होने के लिए तुलसीदास जी ने राम लीला का आरम्भ किया और तदनुरूप जरूरी दृष्य विधान को अपनाते हुए 'रामचरितमानस' की प्रेषणीयता को सहज साध्य बना दिया है. वस्तुतः दृश्य और पाठ्य अंशों का विनियोग तुलसीदास जी ने जिस खूबी से किया है वह इसे पाठक के लिए अनुभव-निकट बनाने और रसास्वादन में बड़ी सहायक हुई है. पूरी रचना में कवि सूत्रधार की तरह आता रहता है और पाठक को सम्बोधित भी करता रहता है और यह सब विना किसी व्यवधान के स्वाभाविक प्रवाह में होता है. ऐसा इसलिए भी हो पाता है क्योंकि तुलसीदास जी सिर्फ पुराण की कथा को पुनः प्रस्तुत ही नहीं करते बल्कि उसमें कुछ और भी शामिल कर नई रचना के रूप में उसे अधिक संवेदनीय बना कर पहुंचाते हैं.

यह भी गौर तलब है कि भक्त कवि तुलसीदास का मन लोक में भी अवस्थित है. वह अपने समय की चिंता से भी आकुल हैं और समकालीन समाज में व्याप्त हो रहे अंधकार से लड़ने का

साहस जुटाने का यत्न भी किया है. वे यह मान कर चलते हैं कि उद्धार सम्भव है क्योंकि मनुष्य के रूप में जन्म लेना पुण्य का प्रताप होता है और देवताओं के लिए भी दुर्लभ है. पर यह मानव जन्म साधन धाम है जिसका सदुपयोग करना चाहिए :

बड़े भाग मानुष तन पावा सुरदुर्लभ सद्ग्रन्थहि गावा, साधनधाम मोच्छ कर द्वारा पाइ न जेहि परलोक संवारा

मनुष्य का शरीर अतुलनीय है जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता इसलिए कल्याण के पथ पर अग्रसर होना चाहिए.

नर तन सम नहिं कवनौ देही,
जीव चराचर जांचत तेही।
नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी,
ग्यान विराग भगति सुख देनी.

एक मनुष्य के रूप में आचरण के लिए सबसे बड़ा धर्म दूसरों का कल्याण करना है।

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई.

गोस्वामी जी का दृढ विश्वास है कि अग्यान और भ्रम के कारण सांसारिक सुख प्रीतिकर हो जाता है और यह भूल जाता है कि मनुष्य ईश्वर का अंश, सदा रहने वाला, चेतन ज्ञान-स्वरूप है और सुख-राशि है.

ईश्वर अंस जीव अविनासी,
चेतन अमल सहज सुखरासी।

परमात्मा से विमुखता ही मनुष्य जीवन की मूल समस्या है, उनकी ओर दृष्टि होने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं.

सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं,
जन्म कोटि अघ नासहि तबहीं.

अतः लोक में अवस्थित रह्ते हुए राम-कथा की प्रस्तुति का उपक्रम ईश्वर और मनुष्य के बीच की खाई को पाटने, उन्हें एक दूसरे के करीब लाने और अनुभव का हिस्सा बनाने के लिए किया गया. उनके श्रीराम जीवन भर संघर्ष के बीच और हर तरह की मानवीय जीवन की व्यथा को सहते हुए निखरते हैं. राम सबके हैं और सब जगह उपस्थित हैं-**सिया राम मय सब जग जानी।** सर्वव्यापी राम सर्वजन सुलभ भी हैं. यह जरूर है कि राममय होने के लिए एक खास तरह के विवेक की जरूरत पड़ती है जो मानस में अपने को डुबोने से या कहें राममय होने से ही आ सकती है. रामचरितमानस के विशाल कलेवर में मनुष्य जीवन के विस्तृत परिसर में पारस्परिक सम्बंधों के उतार-चढाव और अंतर्द्वंद का जैसा सजीव चित्रण हुआ है वह अन्यत्र दुर्लभ है. श्रीराम इन सबके केंद्र में हैं. वे गांव, नगर, वन, पर्वत जहां कहीं जाते हैं, वहां उपस्थित सबसे उनका रिश्ता बन जाता है. वह सभी रिश्तों को निभाते हैं. वे निर्मल सहजता के प्रतीक हैं और और सबसे आत्मीयता रखना ही उनके जीवन का मूल सूत्र है.

सम्प्रदायों और मतों के दायरे से ऊपर उठते हुए तुलसी आम मनुष्य की पीड़ा से उद्वेलित हैं और उनकी भक्ति उसी के समाधान का उपाय प्रस्तुत करती है. उनका राम-राज्य राजनैतिक कम आध्यात्मिक स्तर पर जीवन्तता की सृष्टि करता है. व्यष्टि और समष्टि दोनों परस्पर सम्बन्धित हैं और एक दूसरे पर अवलम्बित हैं. राम का स्नेह ऐसा होता है कि स्नेहपात्र इतना परिव्यापनशील हो उठता है कि राम को ही बांध लेता है. तभी तो ऐसे राम जिनको सकल जगत जपता है वे स्वयं भरत का जप करते दिखते हैं.

भरत सरिस को राम सनेही,
जगु जप राम रामु जपु जेही.

राम चरित मानस के अयोध्या कांड मे भरत वचन की आशंसा करते हुए कहा गया है:

सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे,
अरथु अमित अति आखर थोरे,
ज्यों मुखु मुकुर मुकुर निज पानी,
गति न जाइ अस अद्भुत बानी।

भरत की बात मृदु मंजु अर्थात कोमल और प्रसाद गुण युक्त भी है और कठोर है. यह पूरे मानस का अभिप्राय भी है. भरत में ही राम के स्नेह की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है. भरत सिर्फ आज्ञाकारी नहीं हैं वे निर्वासित राम का पूरा दुख स्वयं अपने लिए वरण कर लेते हैं. राम की श्रेष्ठता या बड़प्पन इस तथ्य में है कि वे सबके हैं. उनके लिए कोई दूसरा नहीं है. भक्त से अधिक भगवान को भक्त की ओर उन्मुख कराया गया है. भक्त की सत्ता में ही भगवान की सत्ता है. श्रीराम ने वाल्मीकि से पूछा कि मैं कहां रहूं तो वाल्मीकि जी ने किंचित परिहासपूर्वक कहा कि ऐसी कोई जगह बताएं जहां आप हो नहीं. फिर भी आप हम से ही कहलाना चाहते हैं तो सुनें:

जिनके श्रवण समुद्र समाना कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना भरहिं निरंतर होंहि न पूरे तिनके हिय तुम्हार गृह रूरे.

जिनके कान के समुद्र में तुम्हारी कथा की अनेक सरिताएं आएं और भरती रहें पर समुद्र पूरा न हो. राम की कथा की निरन्तर चाह बनी रहे, तड़प बनी हो, तृप्ति न हो वहीं आपका घर है. राम चरित मानस की यही सर्थकता है. राम भाव का रस सतत प्रवाहित होता रहे. आज भी तुलसी एक ऐसे सशक्त कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं और उनकी कविता, मनुष्यता और नैतिकता के शिखर को स्पर्श करती है. यह जरूर है कि मानस के अर्थ ग्रहण करने के लिए एक मानस-भावित दृष्टि और संवेदना चाहिए

'अस मानस मानस चख चाहीं'

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः

रावण से पूर्व बालि?

–रघुनाथप्रसाद सराफ
नवी मुंबई, महाराष्ट्र

एक घोर आर्तनाद 'आह' ने समग्र वातावरण को आक्रान्त कर दिया. 'आह' की निर्गमस्थली थी. जहाँ विश्व का अद्वितीय वीर किष्किन्धापति बालि शरबद्ध वक्षस्थल लेकर असह्य पीड़ा से छटपटाता पड़ा था. बालि को इन्द्र प्रदत्त वरदान था कि जो इससे सम्मुख युद्ध करेगा उस प्रतिद्वन्द्वी का आधा बल सहज स्वतः बालि में प्रविष्ठ हो जायगा. किन्तु, इस समरवीर की विशाल काया, तेजस्वी नेत्र देखकर आधा बल ही क्या, किसी मनोबल-हीन का तो सम्पूर्ण बल ही कायापलट हो जावे तो क्या विस्मय? अस्तु,

गिरा विकल महि सर के लागे।
पुनि उठि बैठि देखि प्रभु आगे।।
श्याम गात सिर जटा बनाएँ।
अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ।।

बालि के वक्ष में धँसे हुए बाण का अग्रभाग, उसकी पीठ को छेदता हुआ धरती में कील की भाँति घुसकर, शरीर को निश्चेष्ट बना रहा था. असह्य वेदना से आक्रान्त अपनी व्याकुल आँखों से वह इस बाण के संधाता को मानों ढूँढ़ रहा था. एक अत्यन्त मनोहारी श्यामल पुरुष मस्तक पर जटामुकुट, हाथों में धनुषबाण धारण किए हुए को देखते ही प्रश्न कर बैठाः

क्या तुम्हीं सर्वशास्त्र-निष्णात राम हो, जिन्हें ऋषि-मुनि 'विग्रहवान धर्म' कहते हैं? विदेहराज जनक के धनुषयज्ञ की अंतिम संध्या में भूतभावन भगवान शंकर का धनुष भंग कर मैथिली जानकी की जयमाला एवं परशुराम के वैष्णवी-धनुष को धन्य करने वाले राम क्या तुम्हीं हो? क्या तुम्हीं समुद्र-विजयी महर्षि अगस्त्य के यमजबन्धु ब्रह्मर्षि वसिष्ठ के आश्रम के बटुक हो? गाधितनय महर्षि विश्वामित्र से दुर्लभ शस्त्रविद्या ग्रहण करके, तपोवन को निशिचर शून्य करने वाले राम, क्या तुम्हीं हो? और उस सीता के पति राम भी क्या तुम्हीं हो जिसे हमने रावण के अंकपाश में, किसी गारुड़ी की मुट्ठी में विवश विषविहीना नागिन की भाँति

फुहारों जैसी, चित्कार करती हुई पुष्पक विमान में जाते हुए देखा था? हमें जलविहार करते हुए देखकर जिसने हमसे एक अबला की भाँति अपने उद्धार की याचना की थी तथा कोई रत्नजटित आभूषण भी हमारी ओर फेंका था जो पंपासर की अनन्त जलराशि में दाशरथी धनुर्धर की कीर्तिकथा के अन्तिम अध्याय-रूप समापन मुद्रा में समाधिस्थ हो गया था. बाली की वाणी में उत्तरोतर बढ़ती कटुता को लक्ष्य करते हुए राम कुछ आगे बढ़कर बोले-'सत्य वानरराज! सत्य, महिमामयी जनकनन्दिनी सीता का पति मैं ही राम हूँ. तुम्हारे पास समय का अभाव होता जा रहा है अतः तुम्हें जो जो पूछना हो शीघ्रता से पूछ लो.'

धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं।
मारेहु मोहि ब्याध की नाईं।।
मैं बेरी सुग्रीव पिआरा।
अवगुन कवन नाथ मोहि मारा।।

बालि नाक-भौं सिकोड़ते हुए बोला-'विश्व के सुकीर्तनीय सूर्यवंश में उत्पन्न होन वाले राम! मैं तुम्हें तुम्हारे उस उत्तम कुल का स्मरण कराकर इस समय तो, इस कुकृत्य पर तुम्हें लज्जा-निमज्जित करने मात्र की भूमिका से सुसज्जित कर रहा हूँ. मैं जानता हूँ कि मेरे वक्ष में धँसा हुआ बाण कालदेव का प्रत्यक्ष दूत है. आज तो जाते जाते 'मैं' कह रहा हूँ किन्तु कल से प्रत्येक पल तुम्हारे चरित्र से पूछेगा कि-हे मर्यादा पुरुषोत्तम! क्या तुम्हारी मर्यादा यही थी कि सुग्रीव से संघर्षरत जिस बालि को व्याध के समान छिपकर मारा, उससे तुम्हारा कब का बेर था? तथाकथित 'धर्मविग्रह'! तुम यति वेश में साक्षात अधर्म हो। राजपुत्र होकर भी राजनीति से शून्य हो।'

राम बालि की ओर देखते हुए बोले-'मेरे विरुद्ध तुम्हारे जो आरोप हैं उन्हें और स्पष्ट करो।'

बालि असह्य पीड़ा को नकारते हुए पुनः बोलने लगा-'मैं स्पष्ट कर रहा हूँ कि छिपकर मुझ पर शर-संधान कर जहाँ तुमने धर्म का अपमान किया है, वहीं यह जानते हुए भी कि त्रैलोक्यविजयी रावण जो तुम्हारी पत्नी का अपहर्ता है, वह आज तक संसार में तीन ही महावीरों से पराभूत हो सका है. प्रथम

-कार्तवीर्य सहस्रबाहु, द्वितीय-दैत्यराज बलि और तृतीय-यह किष्किन्धापति बालि. इनमें से मैं ही धराधाम पर अब तक जीवित रहा हूँ। यदि मुझसे मित्रता करके अभ्यर्थना की होती तो सीता लंकेश्वर के स्कंध पर सजी हुई शिविका से उतर कर तुम्हारे वामांग में कभी की आ चुकी होती.

'तुमने तो मित्रता भी की तो इस कायर सुग्रीव से, जिसके पास न धन है, न जन है, न दुर्ग है और न कोष है. जो अपनी पत्नी का उद्धार न करा सका वह तुम्हारी पत्नी क्या लाकर दे सकेगा? दशकंधर जैसे शौर्यसागर का यह पाषाणखण्ड क्या मंदराचल बनकर मंथन कर सकेगा? हे राजपुत्र! राजनीति का मूलमंत्र है-बलवान से मैत्री. तुमने किसी से सुना पढ़ा नहीं? मेरे अकाट्य तर्कों का खंडन करने की तुममें यदि क्षमता है तो करो अन्यथा तुम्हारा कार्य हो चुका, पत्नी वियोग में अश्रुधारा बहाते हुए तुम वन विहार करो।'

राम ने मुस्कुराते हुए कहा-'धर्म और राजनीति के प्रकाण्ड पण्डिण, हे वानरराज! मैंने एक मूर्द्धाभिषिक्त नरेश का अकारण वध किया अतः तुम्हारे अनुसार मैं धर्म हत्यारा हूँ. तुम्हारे जैसे सबल की अपेक्षा दुर्बल सुग्रीव से मित्रता की अतः मैं राजनीति से शून्य हूँ. तुम्हारे कथन का यही सार है? तो सुनो-'मेरे बाण ने हत्या नहीं तुम्हारा वध किया है. मैं सीता के पति के रूप में नहीं, अपितु इस देवभूमि भारत-राष्ट्र के एक सामान्य जन्मना निवासी की भाँति अब तुमसे पूछता हूँ कि- रावण -पराभवकर्ता के रूप में जब एकमात्र तुम ही इस धरती पर वर्तमान थे तब रावण की सेनाएँ कैसे तुम्हारी सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए समस्त भारत वर्ष को पदाक्रान्त करती रहीं? ताड़का, सुबाहु, मारीच आदि की राक्षस मण्डलियाँ जनसामान्य से लेकर वीतरागी तपोनिष्ट मुनियों तक को चबाती हुई, सरयू-गंगा के तटों को निर्जन करती हुई, कैसे निर्भय विचरती रहीं? गोदावरी की सुपीत धारा रक्ताभ कैसे होती रही? उसके तटों पर अस्थियों की पर्वत श्रृंखलाएँ उत्तरोतर क्योंकर सिर उठाती रहीं? विंद्यावटी में 'विराध' और सह्याद्रिमाला में 'कबंध' उत्पात कैसे मचाते रह सके? जन-स्थान कैसे जन-शून्य होता गया? दण्डकारण्य को खर दूषण जैसे उद्दण्ड कैसे उद्दण्डाकरण्य बनाते रहे?

भगवती मुंबा और योगेश्वरी के सुपावन क्षेत्र नर-रक्त-पायनी दुष्टा-धृष्टा शूर्पणखा ने यौन-क्रीड़ाओं के क्षेत्र बना दिए, तब क्या तुम उससे अनभिज्ञ थे? तुम्हारी सीमा के अत्यन्त निकट त्रिशिरापल्ली जैसी बस्तियाँ बसा-बसाकर त्रिशिरा जैसे अनेक राक्षस समय समय पर इस देवभूमि भारत को रौंदते हुए यज्ञ विध्वंस करते रहे, नारियों का सामूहिक शीलहरण और दूधमुँहे बालकों को त्रिशूलों पर उछाल -उछाल कर उनके आर्तनाद को अपना विजय निनाद मानकर आनन्दोत्सव मनाते रहे और तुम चारों समुद्रों के तटों पर आँख मूँदकर क्या वास्तव में संध्या ही करते रहे? तुम्हारी इन संध्याओं का संबंध ब्रह्मसंबंध न होकर, केवल अपने बल के दम्भ से विश्व को आक्रान्त करने वाले 'भ्रमसंबंध' की प्रगाढ़ संस्थापना नहीं तो और क्या था? तुम्हारी सीमाओं को लाँघे बिना ये राक्षसी सेनाएँ पश्चिम के मरुस्थल से लेकर पूर्व में ब्रह्ममाल-यवद्वीप-सुवर्ण द्वीप तक एवं उत्तर में कैलाश से लेकर दक्षिण में कावेरी तक कैसे तुम्हें अनदेखा करती हुई, वसुन्धरा को रौंदती रही? 'हे मूर्द्धाभिशिक्त वानरेश्वर! मुझे उत्तर दो कि-यदि किसी वृद्ध-विकलांग-पक्षाघात पीड़ित के सामने से कोई बधिक होमधेनु खोलकर ले जाए तो वह कदाचित क्षम्य माना जा सकता है. परन्तु त्रैलोक्यविजयी का पराभव कर देने वाले के देखते कोई किसी भी धेनु को वक्रदृष्टि से ले जाए तो उसे 'धिक्कार' ही कहेंगे न?

जब एक अपृहता अबला का क्रन्दन तुम्हें मात्र उद्धार के लिए ही पुकार नहीं रहा था अपितु तुम्हारे कहे अनुसार वह बाला जब तुम्हारी शरणागत ही हो गई थी, तब भी तुमने उसको उस नराधम राक्षस से मुक्त नहीं कराया तो तुम्हें कैसा मूर्द्धाभिषिक्त माना जाए?

विश्व के आदि सम्राट 'महाराज मनु' ने कहा है कि राजा के शारीर में समस्त देवताओं का आवास होता है. वह अवध्य होता है. किन्तु तब, जब वह विष्णु के रूप में प्रजा का पालन करे, काल के रूप में प्रजापीड़िकों को दण्ड देकर सबको निर्भयता प्रदान करे. और राजा यदि अपने धर्म से पतित हो जाए तो प्रजा के एक सामान्य-जन को भी अधिकार है कि उस दस्युरूपी राजा का पैर पकड़कर उसे सिंहासन से नीचे खींचकर, एक क्षुद्र कीट की भाँति अपने पैरों से उसे कुचल डाले. जो प्रजा को अपनी सन्तान के समान स-सम्मान स्नेह और संरक्षण न दे सके उस दुष्ट राजा को राजा मानने वाली प्रजा, उस राजा के पापों का अनन्तगुणा फल इसी लोक में भोग लेती है, परलोक की तो बात ही क्या? तुम मद्यपान कर जिन परस्त्रियों संग जल विहार कर रहे थे, वे देश देश की अपृहता ऐसी बालाएँ हैं जिन्हें तुम्हारे कुचक्री-अनुव्रती ले आए अथवा रावण जैसे लंपटों ने तुम्हें धर्ममार्ग से भ्रष्ट

पतित करने के लिए ही भेंट में दी हुई हैं. तुम्हारी वासना-ज्वाला की लपटों ने तो अपनी अनुजवधु तक को अछूती नहीं रहने दिया है? जब मानव भक्षक पशु को छिपकर मारने में दोष नहीं है

तो फिर मानवता के भक्षक पर (तुम्हारे कहे अनुसार) यदि वृक्ष की ओट से बाण मार दिया तो कौनसा पाप हो गया?'

'सुनो बालि! यदि मैंने बाण छिपकर मारा होता तो वह तुम्हारी पीठ में धँसता. किन्तु, तुम्हारे वक्ष में धँसा हुआ बाण स्वयं अपना परिचय देता हुआ कह रहा है कि-'मैं सामने से आया हूँ. रही राजनीति के ज्ञान की बात-राजनीति का मूलमंत्र 'सबल से मैत्री' तो तुम्हे स्मरण है किन्तु उस बल की व्यख्या में कोष-पुर-सेना आदि जो हैं

इनसे तो व्याख्या अपूर्ण ही नहीं घोर अधर्मस्वरूप प्रतीत होती है. मात्र राजनैतिक दृष्टि से सिद्धान्तहीन समझौते केवल कायर-दुष्चरित्र-विमूढ़ किया करते हैं. तुम सीता दिला भी देते तो भिक्षानिधि सी सीता क्या मुझे ससम्मान अंगीकार करती? वह शिवधनु भंग कराकर ही राम के वामभाग में प्रतिष्ठित हुईं हैं. जिसने उसके वस्त्राभूशणों को 'आह' भरकर धरोहर के समान रखे रक्खा वे मेरे हितैशि हैं. मेरे मित्र हैं. प्राणप्रिया के चिन्हों को सम्भालकर रखने वाले मेरे प्राणप्रिय हैं. 'वाह' कहकर जिसने उनका उपहास किया उसके प्राणों का तो उसकी इन्द्रीय -दासत्व की भूमिका ने पहले ही हरण कर लिया था. मेरे बाण ने तो प्राणहीन-देह को सुगति दान दी है. लंका की ओर प्रस्थान करने से पूर्व यदि अपनी पीठ को अरक्षित छोड़ जाता तो राजनीति के वस्तुतः पंडित कहते कि 'राम को राजनीति का ज्ञान नहीं है.' अब भारतवर्ष भविष्य में लोकोक्ति के रूप में कहेगा कि रावण वध से पूर्व देश में रह रहे बालि का वध ा आवश्यक है. जिस समय अपने मस्तक को हथेली पर रखकर मैं रावण से संघर्षरत होता, उस समय तुम जैसे बलांध-दंभी की वह कैसी कैसी मनुहारें करके तुम्हें मेरे पृष्ठ प्रदेश का, उन निर्णायक क्षणों में, प्रतिघाती ही बना लेता. मेरी ओर से इस समयोचित मांग की पूर्ति मात्र ही हुई है. रावण-वध से पूर्व बालि-वध होना ही चाहिये. हे वज्रमूर्ख वानर! रावण तुम्हें सुरा-सुन्दरियाँ भेजता रहा. तुम्हें काम मूर्च्छित करके तुम्हारी संस्कृ ति का विनाश करता रहा, चारों ओर तुम्हारी भूमि पर काँटों-सलाखों की बाड़ लगाकर तुम्हें हाउस अरेस्ट सा बनाता रहा और तुम अपने बल के दंभ में अंधे होकर बैठे रहे. महर्षि अगस्त्य ने राक्षसों के आतंक से भारतवर्ष को मुक्त कराने के हेतु से तुम्हें समस्त आर्यावर्त के नरेशों की संयुक्त सेनाओं का नायक बनाना चाहा था. याद है, तुमने उनका कैसा उपहास किया था! वानरराज! इस बात को समझिये कि प्रत्येक वह देश जो सबल देश से सीध ो टकराने की स्थिति में नहीं होता है और न ही अपने भीतर के उग्र-उद्दण्डों को अनुशासित करने में समर्थ होता है तब वहाँ का दुर्बल देशाधिपति उन समाज कंटकों से अपनी भूमि (सत्ता) बचाने के लिए उन्हें अपने प्रतिपक्षी देश में खदेड़ देता है. यदि, कहीं उस पराक्रमी देश ने उन उग्रवादियों को खोज खोज कर नष्ट करना या दंडित करना आरम्भ कर दिया तो वह मानवता की दुहाई से सहानुभूति के आधार पर, अपने विरुद्ध होते हुए विश्व के वातावरण को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न करता है, और अपने आंतरिक कार्यों में हस्तक्षेप का आरोप लगाता है. शूर्पणखा स्ववैरिणी स्वयं आई थी. उसे ताड़ुका की भाँति प्राणदण्ड नहीं दिया. केवल कृत्रिम-सुवेष नष्ट करने के लिए नासिका-कर्ण ही लिये, तो भी उसके प्रतिफल के रूप में रावण ने अपनी प्रजा में प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए ही जानकी का हरण किया. राम की शरमाला को चुनौति दे बैठा. भूल गया कि वह जानकी का हरण कर सकता है, जानकी उसका वरण किसी भी भय से प्रताड़ित होकर भी कदापि नहीं कर सकती. राम के पराक्रम का साक्षी मारीच था. साक्षी भी न रहे, इसी कारण से उसे कंचन मृग बना कर उसके अंत की भूमिका रची. रावण के सम्मुख राजनीति में तुम, किसी गजराज के सामने एक क्षुद्र दंभी शशक मात्र ही सिद्ध हुए हो.'

बालि बोला-'दशरथनन्दन! मैं रावण के कुटिल मंतव्य से इतना अपरिचित नहीं था. महर्षि अगस्त्य का मैंने उपहास नहीं किया था अपितु उन्हें विशेष भयभीत मानकर सान्त्वना दी थी. मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था, जब रावण किसी प्रकार मुझसे स्वयं टकराने को उद्यत होता. अब तो, तुमने वह समय मुझे प्राप्त होने ही नहीं दिया.'

राम ने गम्भीर वाणी में कहा. 'धन्य हो, वानरराज! धन्य हो. क्या तुम प्रतीक्षा कर रहे थे उस समय की कि जिस प्रकार अपने अश्रुओं से तुम्हें अभिषिक्त करती हुई जानकी गई, उसी प्रकार जब 'तारा' तुम्हें प्रकम्पित करती हुई जाती तब आप अपनी प्रभंजन गति का परिचय देने का सु-मुहुर्त मानते? क्या अपृहत की हुई तमाम नारियाँ तुम्हारी बहू-बेटियाँ नहीं थीं?

राक्षस जिनका रक्त पी रहे थे वे अबोध ा शिशु तुम्हारे अंगद के समान नहीं थे? यदि नहीं, तो तुम राजा बने रहने के योग्य ही नहीं. कल यदि तुम्हारा वध ा किए बिना लौटने पर उन पीड़ितों के सगे-सम्बन्धी मुझसे पूछते कि 'उस दंभी-प्रमादी बालि का क्या हुआ, तो असत्य बोल नहीं पाता और सत्य बोलने से पूर्व धरती में समा जाने की कामना करता.'

बालि कहने लगा-'किन्तु अब भी मेरा एक प्रश्न है कि क्या ये सब चर्चा आप मुझे यह दशा प्रदान करने से पूर्व, नहीं कर सकते थे?'

नहीं कर सकता था. क्योंकि हमारी तुम्हारी भेंट हो ही नहीं सकती थी!'

'कारण?'

'कारण, कारण तुम्हारा दम्भ, तुम्हारी बलान्धता. अंगद ने हमारे आगमन की सूचना तुम्हारी महारानी को दी. उसी के आधार पर उन्होंने तुम्हें इन सुग्रीव के आह्वान पर क्रोधित होकर निकलते समय रोकने की चेष्टा की.

गहि कर चरन नारि समुझावा
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा।
ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा।।
कोसलेस सुत लछिमन रामा।
कालहु जीति सकहिं संग्रामा।।

तुम नहीं रुके. भेंट का अवसर हो सकता था. तथापि, तुम मेरी स्पष्ट अवहेलना करते हुए संघर्षरत हो गए. एक प्रकार से मुझे ललकारते हुए आगये.'

अन्ततः बालि निरुत्तर हुआ।

इति शुभम्!

जासु राज प्रिय-प्रजा दुखारी,
सो नृप अवसि नरक अधिकारी।
राम राष्ट्रहित नृप-तनुधारी,
सहि संकट किए प्रजाहि सुखारी।

प्रेरक प्रसंग

मेहनत की रोटी

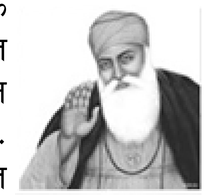

गुरूनानक जी एकदिन एक साधारण बढ़ई लालो की गुरूभक्ति से प्रसन्न होकर उसके यहां ठहर गए. इसकी खबर उस इलाके के प्रमुख मलिक भागो के कानों तक पहुंची. तब समाज में ऊँच-नीच की भावना व्याप्त थी. भागो यह कैसे सहन करे कि एक संत एक बढ़ई के घर में निवास करें. उन्होंने तुरन्त अपने यहां भोजन करने के लिए आमन्त्रित किया. उस समय गुरूजी भजन गा रहे थे और उनका षिष्य मर्दाना रवाब बजा रहा था. उन्होंने मलिक भागो से कहा, 'मैं आपके यहाँ भोजन ग्रहण नहीं करूँगा.' भागो अपमान से जलने लगा. पूछा, 'आखिर क्यों? क्या मैं इससे भी नीच हूँ.'

गुरूजी ने कहा, 'ठीक है, अपनी खाद्य सामग्री दे दो.'

गुरूजी ने उसे अपने हाथों से लेकर निचोड़ा. अरे यह क्या? खून निकलने लगा.

उन्होंने लालो से अपना भोजन मँगवाया. वही रूखी सूखी रोटी और साग. उसे निचोड़ने लगे-दूध की धारा? गुरूजी ने कहा अब समझे तेरी कमाई पसीने की नहीं, शोषण की कमाई है. बेचारा मलिक भागो लज्जित हो गया.

बटवारा

फुलेसर आ बिसेसर दुनू भाई अपना बाप का मुअते-मुअत अलगा होखे के तइयारी क लिहल लो. पंच लो जउरिआइल आ घर-दुआर, खेत-खरिहान, फेड़-खूँट, गहना-गुरिया सब चीज बराबर-बराबर बाँटि दिहल.

दुपहरिया में बँटवारा भइल आ साँझि बेरा दुनू भाई का अलगा-अलगा रसोई बनल. सभे खा-पी के सूते जाए लागल तले का जाने कहाँ से फुलेसर का छोटका लइकवा का मन परल आ पूछलसि-'ए माई! इआ ना खइहें का?'

फुलेसर बो कहली- 'का जाने खइहें कि ना? हम त इहो नइखीं जानत कि केकरा बखरा परल बाड़ी?'

बिसेसर सब बात सुनत रहलें. कहलें कि माई के त बखरा ना लागल ह. अब ओकरा खातिर बिहने पंच बोलावल जाई. उनके मलिकाइन कहली कि हमरा इहाँ त अब कुछु बचलो नइखे कि दे दीं. इहे बात फुलेसरो बो कहली.

माई दुनू जना के चिन्तामुक्त करत कहलसि-'तहन लोग खा लिहलऽ त बुझऽ लो हमहूँ खा लिहनीं. एक बेरा ना खइले हम मरब ना. जा लो, चौन से सूतऽ. बिहने हमार बखरा लगा लिहऽ लो त खिआ दिहऽ लोग.'

बिहानहीं पंच महतारी के बटवारा करे एकठ्ठा भइलें. फुलेसर माई के जगावे गइलें. माई ना बोललि त ना बोललि. माई दुनू जना के भीरि खतम क के हमेसा खातिर सूति गइल रहे. केहू ना जानल कि फुलेसर आ बिसेसर के माई भूखे मुअलि ह कि अपना बटवारा का सदमा से? **सोशल मीडिया से**

सोसल मीडिया से

जंगल के स्कूल का रिजल्ट

हुआ यूँ कि जंगल के राजा शेर ने ऐलान कर दिया कि अब आज के बाद कोई अनपढ़ न रहेगा. हर पशु को अपना बच्चा स्कूल भेजना होगा. राजा साहब का स्कूल पढ़ा-लिखाकर सबको सर्टिफिकेट बँटेगा.

सब बच्चे चले स्कूल. हाथी का बच्चा भी आया, शेर का भी, बंदर भी आया और मछली भी, खरगोश भी आया तो कछुआ भी, ऊँट भी और जिराफ भी. फर्स्ट यूनिट टेस्ट/परीक्षा हुआ तो हाथी का बच्चा फेल.

'किस विषय में फेल हो गया जी?

'पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गया, हाथी का बच्चा।'

'अब का करें?'

'ट्यूशन दिलवाओ, कोचिंग में भेजो.'

'अब हाथी की जिन्दगी का एक ही मकसद था कि हमारे बच्चे को पेड़ पर चढ़ने में टाप कराना है.'

किसी तरह साल बीता. फाईनल रिजल्ट आया तो हाथी, ऊँट, जिराफ सब फेल हो गए. बंदर की औलाद प्रथम आयी. प्रधानाचार्य ने मंच पर बुलाकर मेडल दिया. बंदर ने उछल-उछल के कलाबाजियाँ दिखाकर गुलाटियाँ मार कर खुशी का इजहार किया. उधर अपमानित महसूस कर रहे हाथी, ऊँट और जिराफ ने अपने-अपने बच्चे कूट दिये.' नालायकों, इतने महँगे स्कूल में पढ़ाते हैं तुमको ट्यूशन-कोचिंग सब लगवाए हैं. फिर भी आज तक तुम पेड़ पर चढ़ना नहीं सीखे. 'सीखो, बंदर के बच्चे से सीखो कुछ, पढ़ाई पर ध्यान दो.'

फेल हालांकि मछली भी हुई थी. बेशक तैरने में प्रथम आयी थी पर बाकी विषय में तो फेल ही थी. मास्टरनी बोली, 'आपकी बेटी के साथ उपस्थिति की समस्या है.' मछली ने बेटी को आँखें दिखाई. बेटी ने समझाने की कोशिश की कि, 'माँ, मेरा दम घुटता है इस स्कूल में. मुझे साँस ही नहीं आती. मुझे नहीं पढ़ना इस स्कूल में. हमारा स्कूल तो तालाब में होना चाहिये न?' नहीं, ये राजा का स्कूल है. 'तालाब वाले स्कूल में भेजकर मुझे अपनी बेइज्जती नहीं करानी. समाज में कुछ इज्जत/रिपुटेशन है मेरी. तुमको इसी स्कूल में पढ़ना है. पढ़ाई पर ध्यान दो.'

हाथी, ऊँट और जिराफ अपने-अपने फेल्योर बच्चों को पीटते हुए ले जा रहे थे. रास्ते में बूढ़े बरगद ने पूछा, 'क्यों पीट रहे हो, बच्चों को?' जिराफ बोला, 'पेड़ पर चढ़ने में फेल हो गए?'

बूढ़ा बरगद सबसे फते की बात बोला, 'पर इन्हें पेड़ पर चढ़ाना ही क्यों है?' उसने हाथी से कहा, 'अपनी सूंड उठाओ और सबसे ऊँचा फल तोड़ लो. जिराफ तुम अपनी लंबी गर्दन उठाओ और सबसे ऊँचे पत्ते तोड़-तोड़ कर खाओ.' ऊँट भी गर्दन लंबी करके फल पत्ते खाने लगा. 'हाथी के बच्चे को क्यों चढ़ाना चाहते हो पेड़ पर? मछली को तालाब में ही सीखने दो न?'

'दुर्भाग्य से आज स्कूली शिक्षा का पूरा बेस और विषयवस्तु सिर्फ बंदर के बच्चे के लिये ही तैयार है. इस स्कूल में 35 बच्चों की क्लास में सिर्फ बंदर ही प्रथम आएगा. बाकी सबको फेल होना ही है. हर बच्चे के लिए अलग विषय वस्तु, अलग विषय और अलग स्कूल चाहिये.'

'हाथी के बच्चे को पेड़ पर चढ़ाकर अपमानित मत करो. जबर्दस्ती उसके ऊपर फेलियर का ठप्पा मत लगाओ. ठीक है, बंदर का उत्साहवर्धन करो पर शेष 34 बच्चों को नालायक, कामचोर, लापरवाह, डफर, फेल्योर घोषित मत करो.'

'मछली बेशक पेड़ पर न चढ़ पाये पर एक दिन वो पूरा समंदर नाप देगी.'

शिक्षा- अपने बच्चों की क्षमताओं व प्रतिभा की कद्र करें चाहे वह पढ़ाई, खेल, नाच, गाने, कला, अभिनय, व्यापार/व्यवसाय, खेती, बागवानी, मेकेनिकल, किसी भी क्षेत्र में हो और उन्हें उसी दिशा में अच्छा करने दें. जरूरी नहीं कि सभी बच्चे पढ़ने में ही अव्वल हो बस जरूरत हैं उनमें अच्छे संस्कार व नैतिक मूल्यों की जिससे बच्चे गलत रास्ते नहीं चुने.'

सभी अभिभावकों को सादर समर्पित.

-साभार, सोसल मीडिया से

बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के लिए जिम्मेवार कौन?

सबसे अधिक जिम्मेदार है युवा पीढ़ी में नशाखोरी, बेरोजगारी :

बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार है युवा पीढ़ी में नशाखोरी, बेरोजगारी, पैतृक दुष्मनी, हीन भावना. नशे में वशीभूत होकर न केवल निम्न वर्गीय बल्कि उच्च वर्गीय लोग बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम देते है. यदि महिला अकेली हो तो बलात्कार की संभावना बढ़ जाती है. शराब ड्रग्स इत्यादि का सेवन व्यक्ति का मानसिक संतुलन बिगाड़ देता है. अत्यंत संस्कारी लोग भी ऐसी वस्तुओं का सेवन बलात्कार जैसी घृणित घटना को अंजाम दे देते हैं.

ग्रामीण क्षेत्रों में जमीन जायदाद के विवाद आपसी दुश्मनी के कारण भी लोग सबक सिखाने के लिए बलात्कार करते हैं. महिलाएं स्वाभाविक रूप से कमजोर होती है. इस कारण उन्हें निशाना बनाया जाता है. साथ ही अश्लील साहित्य अश्लील पिक्चरें जो इंटरनेट की दुनिया में सहज सुलभ है का भी बहुत बड़ा योगदान इस तरह के घृणित अपराध में हैं.

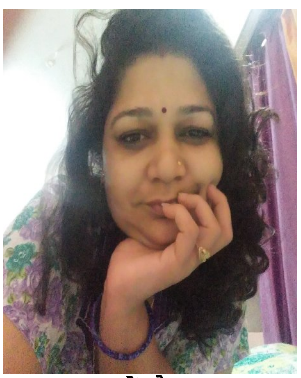

भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के अश्लील कथा चित्र, अश्लील गाने एवं फैशन जगत के नित नए असभ्य प्रयोग व महिलाओं के नित छोटे होते वस्त्र भी इस तरह के अपराधों के लिए जिम्मेदार हैं.

-श्री दीप्ति मिश्रा

उपकुलसचिव, प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.

लड़कियों को उच्च शिक्षा के साथ-साथ संस्कारी बनाएं

हम बलात्कार की निंदा तो करते हैं, लेकिन हम यह नहीं पूछते कि बलात्कार पैदा ही क्यों होता है? हम जड़ में नहीं जाते. वास्तव में देखा जाए तो हमारे समाज का बहुत महत्व होता है, समाज हमारे घर के संस्कारों से बनता है, और संस्कार घर के जिम्मेदार नागरिकों से. आज की स्थिति में घर के सभी बड़ों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे देश की संस्कृति को बचाने के लिए लड़कों को यह अहसास दिलाएं कि उनके देश की हर स्त्री सम्मानीय हैं.उन्हें भी बराबरी से गृह कार्य सिखाएं तथा लड़कियों को उच्च शिक्षा के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ उन्हें भी गृह कार्य में कुशल तथा संस्कारी बनाएं. क्योंकि एक लड़की ही भविष्य की भावी जागरूक माँ होगी.

आज हमारे देश की हालत कुछ ऐसी है कि ना हम पूरी तरह से विदेशी संस्कृति को अपना पाते हैं और ना ही भारतीय संस्कृति के लिए पूरी तरह से समर्पित है, आज जरूरत है हमें विदेशी संस्कृति के बजाय भारतीय संस्कृति को अपनाना, और बेहद जरूरी है बच्चों को बचपन से ही उनमें संस्कारी गुणों को डालना.

-श्रीमती मंजू जायसवाल, शिक्षिका, दुर्ग, छ.ग.

कठोर कानून एवं कठोर निर्णय की आवयकता है

मेरे विचार से इन अमानवीय एवं हम सब को तथा पूरे समाज व राष्ट्र को शर्मसार करने वाली घटनाओं के लिए वास्तव में हम सब लोग दोषी हैं. इसमें हमारा समाज, परिवार, पुलिस प्रशासन, हमारे संचार माध्यम (मीडिया), सोशल मीडिया एवं शिक्षा प्रणाली सभी दोषी हैं. संयुक्त परिवार का टूटना, बाजार में अश्लील साहित्य की उपलब्धता, सिनेमा, टी.वी. चौनलों एवं सोशल मीडिया पर अश्लील सामग्री सरलता से प्रत्येक वर्ग अर्थात अवयस्क बच्चों तक पहुंच की इसमें प्रमुख भूमिका है. इन सबमें सुधार करके, बच्चों को नैतिक शिक्षा प्रदान करके हम इन समस्याओं में कमी ला सकते हैं. इसमें सरकार एवं न्यायलय को

महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी. इसमें कठोर कानून एवं कठोर निर्णय की आवश्यकता है. एकल परिवार व माता पिता की व्यस्तता तथा बच्चों के प्रति उदासीनता भी इसका प्रमुख कारण है. हमें अपने बालकों को नारी का सम्मान करने की शिक्षा प्रत्येक परिवार से देनी होगी. हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता. हमें इसे सदैव स्मरण रखना चाहिए. भारतवर्ष एवं संपूर्ण विश्व को इसकी शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है.

–सतीश कुमार मिश्र 'सत्य', प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

स्वच्छता क्यों जरुरी है?

स्वच्छता प्रकृति की हर चीज के लिए जरुरी है. पशु, पक्षी मछलिया आदि गंदे पानी के कारण मर रहे है, फैक्टरियों का गंदा पानी हम नदियों में डाल रहे है. जिससे पशु पक्षी, मछलियां दूषित हो रही है, मर रहे है. पशु पक्षी भी अपनी सफाई करते रहते है. धार्मिक दृष्टिकोण से भी देखें तो हम तीज-त्योहारों पर अपने शरीर, घर की सफाई आदि करते है. यही कारण है कि तीज-त्योहारों के दिन हमारा मन एवं चित्त दोनों प्रसन्न रहता है. सामाजिक, मानसिक एवं धार्मिक स्वच्छता भी जरुरी है. यहां भी गंदगी का अंबार लगा हुआ है.

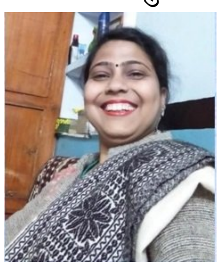

–श्रीमती शिखा गिरी, शिक्षिका, नैनी, प्रयागराज

स्वच्छता एक व्यवहार है, जो स्वयं को और दूसरों को दूषित होने से बचाता है. स्वच्छता में 'स्व' से स्वास्थ्य, अच्छा व 'ता' से ताजगी निहीत है जो तन, मन, वन को स्वस्थ, अच्छा व तरोताजा रखता है.

–लक्ष्मीकांत वैष्णव, चांपा, जांजगीर, छ.ग.

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान, स्व. किशोरी लाल सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान
गद्य के क्षेत्र में: डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान, उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान, हिन्दी सेवी सम्मान
समाज सेवा के क्षेत्र में: समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान–
अन्य: कलाश्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान,
अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
अंतिम तिथि: ३० दिसम्बर २०२०

अध्यक्ष, श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
प्रयागराज–211011, उ.प्र., मो०: 09335155949,
ईमेल–psdiit@rediffmail.com

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1-प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
2. बिक्री की व्यवस्था
3-प्रचार-प्रसार की व्यवस्था
4-विमोचन की व्यवस्था
5- ऑन लाईन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011ई–मेल:
sahityaseva@rediffmail.com

कविताएं/गीत/ग़ज़ल

मेरी प्रेरणा

मेरी प्रेरणा से मेरी मुलाकात हुई
धीरे धीरे मेरी प्रेरणा से बात हुई
जैसे थम सी गई जिन्दगी
जब मेरी प्रेरणा से मुलाकात हुई।।
मेरी प्रेरणा ने मुझे कहा
तुम बहुत ही सुन्दर और प्यारी हो
एक बहार जीवन में जैसे आ ही गई
अब जीवन को जीने लगी हूं
अपने तरीके से रहने लगी हूं।
सबके लिए जीती रही अब तक
आज अपने लिए भी जीने लगी हूं
मेरी प्रेरणा से मुझे कब
मोहब्बत हो गई
अब मेरी प्रेरणा से
मोहब्बत करने लगी हूं
अब अपने लिए जीने लगी हूं
अब अपने लिए जीने लगी हूं।

-डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक
राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना
महासचिव, रायपुर, छ.ग.

स्त्री

बाँचती है स्वयं को स्त्री
पचास के पार ही
क्षीण होती देह-शक्ति
पर बढ़ती जाती है जिजीविशा
तैयार करने लगती है
बैलेंस शीट
करती है पुनरावलोकन आमद-खर्च का
और छूटी हुई मदों को
फिर से संभालती है
तब जान पाती है कि जिंदगी
मात्र कागज का पुर्जा नहीं
जो मद छूट जाती है,
वह जगह
खाली ही रह जाती है
पर मजे की बात यह है कि
बैलेंस शीट
फिर भी 'टेली' हो जाती है।

डा०.मंजु रुस्तगी
हिंदी विभागाध्यक्ष,
वल्लियाम्मल कालेज फार वूमेन, अन्ना
नगर, चेन्नई

वो एक दिन

मैंने जल्दी-जल्दी काम निबटाये,
कपड़े पहने और आँख बचाकर,
निकलना चाहा जब घर से,
कि नन्हीं कुंजू मुझसे लिपट गई,
'माँ तुम कहीं मत जाओ, मैं तुम
संग खेलूंगी, बातें करूंगी,
मैं तुम्हें तंग न करूंगी।'
मैंने एक दस का नोट उसकी
तरफ बढ़ाया और कहा कि लो
चॉकलेट ले लेना।
वह दौड़ी अन्दर गई व अपनी
गुल्लक उठा लाई,
धड़ाम से पटकी जमीन पर दे
उसने सारे पैसे समेट कर,
मेरी झोली में डाल दिए,
व कहा माँ सारे पैसे ले लो
पर आज मुझे छोड़ मत जाओ।
मैं कितनी निष्ठुर बन गई थी कि
सब कुछ समेट, मुस्कराकर उसे
दे दिया और चल दी, अपनी
ममता का गला घोंट कर,
चन्द कागज के टुकड़े बटोरने,
जो मुझे सुख तो दे सकते हैं
पर खुशी नहीं। न जाने कब
स्कूल आ गया, मैंने इस्तीफा
प्रधानाचार्य की मेज पर रखा
और आ गई उस संग कुछ अनमोल
पल बिताने, जो एक बार जाकर
फिर कभी न आयेंगे।

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र.

बोझ नहीं, मेरा भाई है

एक वयोवृद्ध साधु
डोरी, कमण्डल, आसनी
व अपने उपयोग की
अन्य चीजों का गट्ठर
अपनी पीठ पर लिए,
पहाड़ी पर चढ़ रहा था।
हाँफते हुए कदम दर कदम
आगे बढ़ रहा था।
उसके पीछे दस-बारह साल की एक
लड़की
पीठ पर अपने नन्हें भाई को लिए
तेजी से चली आ रही थी।
उसका चेहरा खिला था,
वह खुशी में कोई गीत गा रही थी।
जब वह साधु को पीछे छोड़ते हुए
आगे बढ़ी तो साधु ने उसे रोका
और कहा-
बेटी! अपनी पीठ पर इतना बड़ा बोझ
लेकर
थक गयी होगी, थोड़ा आराम कर लो,
क्योंकि आगे लम्बी चढ़ाई है।
साधु की समझ पर लड़की हँस दी
फिर विनम्रतापूर्वक बोली-
बाबाजी माफ कीजिए
बोझ आपकी पीठ पर है।
मेरी पीठ पर बोझ नहीं,
मेरा भाई है।

-बलवन्त, सोनभद्र, उ.प्र.

गीत

राम मिले सीता को जैसे, मुझको भी तुम मिल जाओ
तोड़ धनुष को वरण करो तुम, राम मेरे तुम बन आओ
नहीं मांगती बंगला गाडी, नहीं मांगती मैं सोना
कुछ छोटे-छोटे सपने हैं, आकर पूरे कर जाओ
................राम मेरे तुम बन आओ
युग-युग से प्यासी है धरती, आकर अगन बुझा जाओ
घट-घट बैठी कोटि अहिल्या, आकर उन्हें जिला जाओ
........राम मेरे तुम बन आओ
दुर्योधन, दशग्रीव बने सब, नारी हाहाकार करे
मर्यादा पुरुषोत्तम हो तुम, आकर पाठ पढ़ा जाओ
.........राम मेरे तुम बन आओ
साधू-संत सियाने जितने, सब माया के लोभी हैं
बच न सकी सोने की लंका, त्रेता याद दिला जाओ
.............राम मेरे तुम बन आओ

-**डॉ० पूनम माटिया,** दिलषाद गार्डन, दिल्ली

श्रीराम

अमर शहीदों को श्रद्धांजलि व सैनिक वीरों को नमन
वीरो तुम्हें नमन सैनिक रणधीरो तुम्हें नमन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।
सीमा पर ही ईद दिवाली उत्सव पर्व तुम्हारा।
राष्ट्र-सुरक्षा ही जीवन का है संदर्भ तुम्हारा।।
ऐसे राष्ट्रसपूतों को यह देश नमन करता है।
जिनका साहस शौर्य देश का हर संकट हरता है।।
शौर्य तुम्हारा राष्ट्रघात का करता सदा दमन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।
जिन वीरों का बल विक्रम भी सुरभित नहिं हो पाया।
जिन पर दुश्मन के छल की पड़ गई क्रूरतम छाया।।
ऐसे उन शहीद बेटों को भारत याद रखेगा।
वीर सैनिको शौर्य तुम्हारा सारा विश्व लखेगा।।
छद्मयुद्ध की इस अहंधी को करना तुम्हें शमन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।
गौ सी समरस भूमि भारती पर जो अहंख उठाये।
वीर तुम्हारे साहस से वह क्षार क्षार हो जाये।।
भारतमाता के सपूत भारत के वीर लाल हो।
वीर सैनिको दुश्मन दल दलने के लिए काल हो।।
विश्व-शांति हित शौर्य तुम्हारा साक्षी नीलगगन है।
आज तुम्हारे ही साहस से सुरभित हिन्द चमन है।।

-लक्ष्मीप्रसाद गुप्त 'किंकर', ईशानगर, छतरपुर,मप्र

सज़ा मत देना

मेरे खतूत मेरी गज़ले जला मत देना।
मेरी चाहत भरी उलफत को भूला मत देना।

यह तो सच है कि तुम्हें चाहने वाले है कई-
उनके लालच में अगुँठा भी दिखा मत देना।

झूठ के सच के भी अन्तर को परखना ए दोस्त-
किसी फरेब में सच को भी दगा मत देना।

तुम समझदार हो पहचानते हो नब्ज हितेष-
किसी खुदगर्ज को पहलू में जगह मत देना।

तोल भी लेना मुहब्बत भरे अल्फाज़ सभी-
बू-ए-वफा जिसमें ना हो उसको तरह मत देना।

लोग तारीफे करेंगे भी मिसालें देंगे -
रूह को जिस्म की चाहत में सज़ा मत देना।

लोग ऊँगली के साथ पोहँचा पकड़ लेते है-
हाथ छूने की इजाजत किसी को मत देना।

जो भी कोषिष करे पाने या तुम्हें छूने की-
तुमको अपनी ही कसम उसको सिला मत देना।

-डॉ० हितेश कुमार शर्मा,
बिजनौर, उ.प्र.

मीठी सी मुस्कान

स्वर्ग का आनन्द छुपा हुवा है, मीठी सी मुस्कानों में
प्रीत, प्रेम की पावन सरिता, बहती है इन्सानों में
कौन सिखाए भ्रातत्व की भाषा, बन्धुत्व सा शब्द सुना नहीं
मात-पिता की काया कलपती, सम्प नहीं सन्तानों में,
पर निन्दा, पर पंच से हम को, परमानन्द सा मिलता है
करते हैं विश्वास सदा हम, दुविधाओं, व्यवधानों में
द्वेष, ईर्ष्या की भक्ति ही, परम सुखों का केन्द्र बना
भजन, कीर्तन, आरती, पूजा, क्या रक्खा है आज़ानों में
झूठ, कपट, छल, छुपा हुवा है, हम सँस्कारी जीवों में
श्कतने काले नाग हैं हम सब, दुग्ध, धवल परिधानों में
आशावादी बनकर जीना, लक्ष्य मेरा खुर्शीद यहाँ
हो जाते हैं, 'उसके' दर्शन, कभी-कभी अनजानों में।

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द,
गणेश कालोनी, चन्दौसी, संभल, उ०प्र०

इन दिनों मै प्यार में हूँ

इन दिनों मै तुम्हारे प्यार में हूँ...
ऐसा नहीं कि मैंने तुम्हें पहले से नहीं जाना था....
तुम मेरे लिये अजनबी भी नहीं थे..
बरसों तुम्हारे सानिंध्य में गुजारे...
पर तुम्हारी कद्र कभी नहीं की।
ठीक है...!
तुम थोड़े अटपटे लगते हो...
सूने भी...
षायद थोड़े बेढब भी हो.
छोटे भी हो...
पर कोई बात नहीं।
कभी-कभी गंदे भी रहते हो,
पर फिर भी मेरे अपने हो।
पता है! तुम्हे पाने के लिए....
तुम्हे सजाने संवारने के लिए....
कितनी दौड़.. दौड़ ही दौड़,
कितनी थकान...थकान ही थकान..
सुकून का एक पल तुम्हारी छाँह में नहीं बीता,
जबकि माँ के आँचल सा सकून
तुम्हारे साथ ही तो पाया था..।
पर तब षायद समझ नहीं थी...
क्योंकि समझदारी ज्यादा थी...।
लेकिन अब कृबाहरी दौड़ धूप बंद है.
आपा-धापी भी बंद है,
तो मैंने सीख लिया है तुम्हारे साथ रहना
पता चला कि कितना सकून है तुम्हारे अंदर.
तुम्हारे साथ में....
मैंने जान लिया है....
हाँ, मैंने जान लिया है
मेरे प्यारे मकान, कि तुम मेरे घर हो.
रैन बसेरा नहीं।
और सारी दुनिया सुन ले
कि मुझे अपने घर से मोहब्बत हो गई है।

-ज्योति जैन
1432 / 24, नंदानगर
इन्दौर, म.प्र.,-452011
मो. 9300318182

सोने की चिड़िया

सोने की चिड़िया कहलाने वाला,
ऋषियों का देश बतलाने वाला,
यह भारत देश क्या से क्या हो गया,
सोना मिट्टी बनता चला गया,
और ऋषि चंबल में जाते चले गये।
संस्कृति जो संसार का मुकुट
कहलाती थी,
सौम्य, सभ्य और सिमटी सी थी,
आज कितनी छिछली, घिनौनी
बनती जा रही है।
देष की नारी, पुरुषों से लगाई
दौड़ में, अपना पूजनीय स्थान
खोती जा रही है।
जी चाहता है, मेरी बात
कोई समझे,
कि इस धरा पर सिर्फ
मानव जन्म लेता है,
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई नहीं।
फसादों में खुद को फंसा के
कितना खुश होता है ये आदमी
और सोचता ही नहीं कि हर किसी
शर्त पर, सिर्फ आदमी को खोता है आदमी,
छोड़ पराये चक्करों को
असलियत पर आना होगा
अमन, शांति और अहिंसा अपनाकर
भारत को फिर से सोने की चिड़िया
बनाना होगा।

लहुलुहान अखबार

एक दिन सुबह उठते ही
इक लहुलुहान अखबार
मुझे लिपट गई व चीख-चीख कर रोने लगी।
मैंने उसे ढांढस बंधाया
और उसकी दासतान
सुनने के लिए, उसे
कुर्सी पर बिठाया।
बोली सीना फाड़कर वह
देख-देख कितने शहीदों
का खून मुझ पर लगा है,
ये ही नहीं कितनी दुर्घटनाओं,
बलात्कारों व कई हवाई
दुर्घटनाओं के उलीचे हुए
खून के छींटे भी पड़े हैं मुझ पर।
ये एक दिन की बात नहीं
रोजमर्रा की बात बन गई है
थक गई हूँ, हार गई हूँ,
कुछ रास्ता दिखा मुझे
वह चुपचाप अपना आंचल
संभाल बैठ गई, जब उसने
देखा कि उसे देख मेरी
आँखों से खून टपक रहा था।

हिन्दुस्तान
चलते-चलते 16
लिम्का बुक में दर्ज हुई हवा से चलने वाली बाइक

-शबनम शर्मा,
पांवटा साहिब, सिरमौर, हि.प्र.

आराधना

–श्री कृष्ण कुमार
'कनक', 'संपादक', कनक काव्य कुसुम (वार्षिक पत्रिका), फिरोजाबाद, उ.प्र.

दिनभर हुई बारिश के बाद की सांध यकालीन वेला, आकाश स्वच्छ, हल्के वायु वेग के साथ बहते हिमवर्ण मेघ, अस्ताचलगामी भानु की अरुणिमा से प्रकीर्णित रश्मियों का मोहक छविजाल. अत्याधुनिक शैली से सुसज्जित प्रासाद सरीखी भव्य इमारत की छत पर मौन मुद्रा में विचारमग्न बैठी उन्नीस वर्षीय वयसंधि को प्राप्त नवयौवना आराधना मानो दिनकर के अन्तिम दर्शन में स्वयं को विलीन कर रही थी. दाँए हाथ की अनामिका में एक स्वर्ण सी कान्ति वाली अँगूठी थिर न थी. देखते ही देखते क्षितिज की अरुणिमा शून्य हो गई. श्वेत मेघ भी निशावर्णी हो चुके थे. पक्षियों का कलरव भी शान्त. अँगूठी अब भी दोनों हाथों में निरंतर भ्रमण कर रही थी. टकटकी आकाश की ओर, दृष्टि स्थिर..सहसा आराधना को भान हुआ, माँ कई बार आवाज लगा चुकी है. हर बार उसने यही कहा है 'हाँ माँ अभी आई.' आराधना का ध्यान भंग हुआ. अनायास ही देह में दामिनी के कलाप सी अनुभूति हुई, तन का ताप बढ़ा कि बदन पसीना -पसीना. आराधना ने अपना दुकूल सँभालकर कंधे पर रखा. उठकर सीढ़ियों से होते हुए नीचे की ओर बढ़ी, ठीक उसी प्रकार जैसे आकाश को छोड़कर भाष्कर भगवान शनैः-शनैः अपने शयन कक्ष में प्रविष्ट होते हैं.

-२-

भवन के दूसरे दर्जे के मध्य के विशालकाय आँगन में भोजनालय के ठीक सामने बड़ी सी मेज के चारों ओर पुराने जमाने की अप्रतिम सौन्दर्य से परिपूर्ण छह कुर्सियाँ जिनके दोनों किनारे गुम्बदाकार..स्वरूप ठीक वैसा ही जैसा कि आज-कल न्यायाधीश, न्यायमूर्ति आदि की कुर्सियों का होता है. मेज पर दो फूलदान जिनमें कृत्रिम फूलों के साथ ही बीच-बीच में रजनी गंधा और चमेली की अधखिली कलियों की सुगंध पूरे वातावरण को गंधायित कर रही थीं. भोजनालय के दरवाजे के ठीक ऊपर ओम का प्रतीक चिह्न सुशोभित था. इसी प्रकार वाचनालय के द्वार के ऊपर दिगम्बर मुनि का अध्ययन मुद्रा का चित्र, शयनकक्ष के द्वार के ऊपर स्वस्तिक, अतिथि कक्ष के द्वार के ऊपर 'सुस्वागतम' के साथ ही किसी स्त्री के जुड़े हुए हाथों का मनोहारी चित्र. प्रत्येक कक्ष के समक्ष अत्याधुनिक तकनीक के प्रकाश उत्सर्जक यंत्रों से उत्पन्न प्रकाश से सम्पूर्ण रिक्त स्थान दूधिया प्रकाश में स्नान कर रहा था. मेज पर कुर्सियों के ठीक सामने एक-एक मखमली वर्गाकर पोश पड़े थे. रमा ने एक-एक कर सभी कुर्सियों के सामने प्लेट, काँटा, चम्मच, कटोरियाँ, ग्लास आदि सजा दिए. माँ ने भोजन कक्ष से ही आवाज लगाई 'भोजन तैयार है सब लोग आ जाओ.' माँ की आवाज सुनकर सबसे पहले बड़ी बहन मुस्कान फिर दोनों छोटे भाई रंजीत और आनंद फिर पिताजी अपनी-अपनी कुर्सी पर आ बैठे. आराधना की कुर्सी अभी भी खाली थी. यद्यपि एक कुर्सी और भी खाली थी किन्तु वह कुर्सी तो सदैव ही खाली रहती है क्योंकि माँ कभी पसंद नहीं करती कि भोजन किसी नौकर से बनवाया जाय. रमा ने सबके लिए खाना परोसा. आराधना अभी भी अनुपस्थित थी. रमा ने माँ से कहा 'माँ जी! आराधना बिटिया अभी नहीं आईं हैं.' वैसे भी नौकरों की इतनी हिम्मत कहाँ कि वे बच्चों को खुद ही कुछ कह सकें. माँ ने आवाज लगाई 'आराधना! भोजन नहीं करना क्या? पहले तो दस बीस आवाजें खाकर छत से उतरना हुआ, अब कमरे से बाहर तक आने में भी संदेशे भेजने पड़ रहे हैं.' माँ और भी आगे बड़बड़ाती रही. आराधना धीरे से आकर किसी मुरझाई लता सी धड़ाम से अपनी कुर्सी पर आ गिरी. सब भोजन करते समय हँसी मजाक जैसे सामान्य व्यवहार में रत और आराधना टुकड़े गिनने में. पिताजी नगर के बड़े व्यापारी, जैन समाज के प्रतिष्ठित समाजसेवी... दिनभर की थकान कि कहाँ क्या हो रहा है सब पर बिना ध्यान दिए बस भोजन में ही एकाग्र थ. मुस्कान स्नातक की छात्रा है. बड़ी होने के नाते तीनों भाई बहनों को गोद में खिलाया है. सब के स्वभाव से परिचित है. आराधना की कोई बात मुस्कान से छिपी नहीं है. आराधना ने इसी वर्ष बारहवीं की है. विद्यालय के साथ-साथ जनपद में भी प्रथम. आज आराधना का व्यवहार वैसा नहीं जैसा सदैव होता है. वह बिल्कुल शान्त है, किसी भयंकर सुनामी के पश्चात के समुद्र की भाँति. सब भोजन करके अपने अपने कक्ष की ओर चले गए ..आराधना भी.

- ३-

सुजाता! तुम तो आराधना की बाल सखी हो, उसका कोई ऐसा क्षण नहीं जो तुमसे भिन्न कटा हो. निःसंदेह तुम आराधना के किसी भी पहलू से अनभिज्ञ

हो, यह संभव नहीं. क्या तुम मुझे बताओगी कि आज ऐसा क्या हुआ? कि आराधना का व्यवहार अपने स्वभाव के विपरीत हो गया है. सुजाता ने कहा 'जी दीदी! मुझे सब ज्ञात है. अभी नौ बजे हैं. घर में सब जाग रहे हैं. ये बहुत लम्बी कहानी है. मैं आपको सब कुछ बताऊँगी परन्तु अभी नहीं. मैं दस बजे के बाद आपको फोन करूँगी, अभी रखती हूँ. सुजाता ने फोन रख दिया.

मुस्कान समझ चुकी थी, कुछ तो ऐसा अवश्य ही हुआ है जिसने आराधना को बहुत अधिक झकझोरा है. मुस्कान ने उठकर अपने कमरे से बाहर देखा. पिताजी के कमरे से खर्राटे की आवाजें रह रहकर आ रहीं हैं. नौकर अपना -अपना काम निपटाने में लगे हैं. रमा भोजनालय में बर्तन सहेजकर रख रही है. बिरजू काका ने द्वार के प्रहरी को मुख्य दरवाजे पर ताला लगाने का आदेश दे दिया है. माँ वाचनालय में हरिवंश पुराण की टीका बाँच रहीं हैं. मुस्कान ने आराधना के कक्ष की ओर देखा. दरवाजा अधखुला पड़ा है. प्रकाशहीन कक्ष में एक शाही पलँग के सिरहाने पर रखी टेबल-लैंप का हल्का सा प्रकाश आराधना के अपलक नेत्रों और कपोलों पर से होकर कान के पीछे से केश-कानन में समाते अश्रु बिन्दुओं को स्पष्ट दिखा पाने में सक्षम है. मुस्कान उल्टे पाँव अपने कक्ष में आ बैठी. घड़ी की सुई मानो दस गुना मध्यम हो गई थी.

-४-

फोन की घंटी बजी. मुस्कान विद्युत-वेग से मोबाइल पर झपटी किन्तु देखा कि यह काल तो सुजाता की नहीं है. सहसा उत्साह भंग हो गया. घड़ी की ओर देखा, पता चला कि सवा दस बज चुके हैं. सुजाता का फोन अभी तक नहीं आया. मुस्कान एक बार फिर से आराधना के कक्ष की ओर गइ. दरवाजा पहले की अवस्था में ही है. किन्तु इस बार टेबल-लैंप का प्रकाश आराधना की पीठ पर पड़ रहा है. मुस्कान को लगा कि आराधना सो गई है. तभी उसे अपने कक्ष से मोबाइल की घंटी फिर सुनाई दी. मुस्कान दबे पाँव अपने कक्ष में लौटी. इस बार सुजाता का ही फोन था. बात प्रारंभ हुई. सुजाता ने कहा 'दीदी मुझे सब कुछ बहुत पहले ही आपको बता देना चाहिए था. मेरा अपराध क्षमा करें.' सुजाता आखिर हुआ क्या? मुझे सब कुछ सच सच बताओ. तुम भी तो मेरी बहन ही हो.

ठीक है दीदी मैं सब कुछ सच सच बताती हूँ आगे सब आपको सँभालना है. मुस्कान ने कहा ठीक है तुम बताओ आगे मैं देख लूँगी. सुजाता ने बताना प्रारंभ किया.

...बात तब की है जब हमने दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की थी. आपके कहने से हम दोनों ने अंग्रेजी वाचन कौशल सीखने हेतु एक संस्थान में प्रवेश लिया. वहाँ का माहौल वैसा न था जैसा हमने दसवीं तक देखा था. यहाँ तो सभी लड़के लड़कियाँ आपस में खूब घुल मिलकर रहते थे. यह सब न मुझे पसंद था और न आराधना को. कई बार तो आराधना ने लड़कों को अच्छी तरह से झाड़ दिया था. किसी की भी हिम्मत न थी कि कोई हम दोनों की ओर नजर उठाकर भी देखे. इसी बीच एक घटना हुई. शनिवार के दिन मंचीय प्रस्तुतिकरण का क्रम होता था. उसमें एक लड़का सिनेमा के गीत गाया करता था. उसकी पपीहे सी हृदयभेदी आवाज ने न जाने कैसा जादू किया कि आराधना के द्वारा की जाने वाली प्रत्येक चर्चा में उसी का चिन्तन बस गया. मैं भी आराधना के स्वभाव में आए आकस्मिक परिवर्तन से अचम्भित थी. पहली बार मैंने अनुभव किया कि आराधना ने स्वयं ही उसके समीप होने के उपाय खोजे. पहले तो उसका नाम ज्ञात किया फिर अरुण से वार्तालाप प्रारंभ किया. अंततः घनिष्ठता इतनी बढ़ी कि आराधना मुझसे ही बहुत कुछ छुपाने लगी.

खैर तीन मास का समय बीत गया और हमारा वह पाठ्यक्रम भी. हम दोनों ग्यारहवीं में आ गए. आराधना सब कुछ साझा करती थी बस अरुण की चर्चा छोड़कर. यदा कदा बात होती भी तो वह अरुण के वायलिन, सितार और गायन की प्रशंसा ही करती. एक बार जब ग्यारहवीं की परीक्षा चल रही थी तब आराधना ने बताया कि अरुण उसे मिलने के लिए दबाव बना रहा है इसलिए उससे सारे संबंध समाप्त कर दिए हैं. मुझे लगा कि अब सब कुछ ठीक हो गया है. किन्तु वास्तव में कुछ भी ठीक नहीं हुआ था. अगले तीन दिन तक वह मेरे घर घण्टों तक बैठकर रोती रही थी. तीन चार माह तक यही सब चलता रहा. आराधना की कठिनाई कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी.

हम दोनों बारहवीं में पढ़ रहे थे. अचानक आराधना के स्वभाव में परिवर्तन हो गया. अब वह प्रसन्न रहने लगी. मैं पूछती भी तो वह कुछ न बताती. मैं समझ चुकी थी, आराधना ने अरुण के प्रणित प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है. किन्तु वह मुझे कुछ भी बताने को तैयार न थी. बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद से ही वह फिर से अवसाद में आ गई. तब भी वह मुझे कुछ भी बताने को तैयार न थी.

आज सुबह आराधना मेरे घर आई, बहुत रोई. मैंने पूछा तो बताया कि अरुण का प्रेम देह भाव तक ही रहा है. उसकी दृष्टि में मेरे समर्पण का कोई मूल्य नहीं. पराकाष्ठा तो तब हुई जब शादी की बात पर अरुण ने कहा 'तेरे जैसी मूर्ख लड़की से शादी कौन करेगा? आज के बाद मुझसे बात मत करना.'

-५-

मुस्कान आश्चर्य में थी. वह आराधना की बड़ी बहन है, इतना कुछ हो गया, आज तक उसे कुछ पता ही न चला. फोन सिरहाने रखकर मुस्कान ने घड़ी की ओर देखा. बारह बज चुके हैं. मुस्कान अपने कक्ष के द्वार पर आई. चारों ओर देखा. पिताजी के कमरे से अब भी खर्राटे की आवाजें रुक रुककर आ रहीं हैं. माँ अपनी साड़ी से मुँह ढ़के अपने कक्ष में सो रही हैं और रमा नीचे दरवाजे के पास चारपाई पर. मुख्यद्वार पर प्रहरी इधर उध ार टहल रहा है. आराधना के कक्ष का द्वार अब भी पहले की तरह ही अधखुला पड़ा है. इस बार टेबल लैंप का प्रकाश आराधना के कपोलों से लुढ़कते अश्रुओं पर ही पड़ रहा था. आराधना के नेत्र अब भी अपलक...

मुस्कान कक्ष के अंदर पहुँची. पलँग पर सिरहाने की ओर बैठी. धीरे से आराधना के सिर पर हाथ फेरा. आराधना चौंक पड़ी. उठकर बैठ गई. 'दीदी आप!' आश्चर्य से कहा.

हाँ मैं, पर तू रो क्यों रही है? अभी तक सोई क्यों नहीं?

कुछ नहीं, मैं कहाँ रो रही हूँ? बस ऐसे ही आँसू निकल आए हैं.

आराधना तुझे झूठ बोलने की कोई आवश्यकता नहीं और न चिंता करने की. सुजाता ने सब कुछ बता दिया है, दसवीं से अब तक का सब कुछ.

आराधना अपनी बहन के वक्ष से लिपटकर फफक पढ़ी. मुस्कान के नेत्र भी सजल हो आए. तुम अभी बच्ची हो. मैं तुमसे दो वर्ष बड़ी हूँ, अनुभव में भी. शायद तुमने मुझे अपने विचारों से अवगत कराया होता तो यह स्थिति कभी न आती. बहन! एक बात सदैव याद रखना, बड़ी पुरानी कहावत है 'घर का मारे छाँव में डारे' रक्त के संबंधों का स्नेह आनुवंशिक होता है. संसार में कोई कितना भी स्नेह क्यों न दर्शाए किन्तु माता-पिता के स्नेह पर भारी नहीं पड़ सकता. जब यज्ञ की वेदी के समक्ष संबंधों को अभिमंत्रित किया जाता है तभी स्नेह चिर स्थाई होता है. अन्यत्र का स्नेह जो कि देहभाव के आकर्षण से जन्मा है, उसकी गति देहभाव तक ही सीमित होती है. अब जो हुआ सो हुआ, सब कुछ भूलकर अपने बहुमूल्य मानव जीवन को उसकी परम गति तक पहुचाने के लिए स्वयं को तैयार कर. गीतऋषि गोपाल दास नीरज ने कहा हैः

छिप-छिप अश्रु बहाने वालो।
मोती व्यर्थ लुटाने वालो।
कुछ सपनों के मर जाने से
जीवन नहीं मरा करता है।१

-६-

समुद्र की लहरों से टकराकर लौटती सर्द हवा तन की रोमावलियों में पुलक भर रही थी. इण्डोनेशिया के बाली द्वीप में भारतीय दूतावास के सामने विविध प्रकार के वृक्ष हवा के साथ अठखेलियाँ कर रहे थे. सुगंधि ात पुष्पों की प्रत्येक पंक्ति से विविध ावर्णी पुष्पों से निकलकर सुगंध बिखेरते परागकण वायु के साथ झूला झूल रहे थे. दूतावास के मुख्य द्वार के ठीक सामने रखी मेज के पास जंगली लकड़ियों से बुनकर तैयार की गई कुर्सियों पर दो युवतियाँ बैठी आपस में बातें कर रहीं थी. अवंतिका पेंट-शर्ट, काला चश्मा और सिर पर हैट पहने एक पैर पर दूसरा पैर चढ़ाए हाथ में कुछ कामकाजी दस्तावेज पकड़े बैठी थी. धीरे से बोली, 'महोदया यद्यपि आपके व्यक्तिगत जीवन के संदर्भ में कुछ भी कहना मेरे अधि ाकार क्षेत्र में नहीं है किन्तु एक प्रश्न सदैव मेरे मन में चलता रहता है कि आप अपने देश भारत से इतनी दूर हो, फिर भी सदैव साड़ी पहनना ही पसंद करती हो, जबकि इस इक्कीसवीं सदी की लड़कियों द्वारा प्रायः ऐसे परिधान पसंद से परे ही रहते हैं.' आराधना ने हवा में उड़ते साड़ी के पल्लू को ठीक करते हुए कहा 'अवंतिका तुम इस भारतीय दूतावास में केवल मेरी मुख्य सचिव ही नहीं बल्कि मेरी सखी भी हो और फिर तुम भी तो भारतीय मूल की हो इस नाते भी मेरी बहन ही हुई. मेरे व्यक्तिगत जीवन के विषय में चर्चा करने का तुम्हें पूरा अधि ाकार है. रही बात साड़ी पहनने की तो मैं भारत से दूर हूँ भारतीय संस्कार मुझसे दूर नहीं.' एक लम्बी साँस खींचते हुए आराधना ने कहा 'अवंतिका! एक समय था जब किसी ने मुझसे कहा था कि आराधना तुम साड़ी में संसार की सबसे सुंदरतम् स्त्री प्रतीत होती हो. यह बात कितनी सत्य थी, यह तो मुझे ज्ञात नहीं किन्तु उसे मेरे दैहिक सौंदर्य से ही स्नेह था यह बात ही सत्य है यह मुझे अच्छे से ज्ञात है' इतना कहते-कहते आराधना का कण्ठ रुँध गया और नेत्र सजल हो आए. अवंतिका ने झिझकते हुए कहा 'महोदया! क्षमा करें अनजाने में मैंने आपके किसी गहरे घाव पर नमक छिड़क दिया.' आराधना ने कहा 'ऐसी कोई

बात नहीं, तुम अपनी बात पूरी करो’ ‘नहीं महोदया! मुझे कार्यालय के कुछ कार्य निपटाने हैं. इण्डोनेशिया के संस्कृति मंत्रालय से आपके लिए एक गुप्त पत्र आया है, बस वही आपको देने आई थी.’ अवंतिका ने इतना कह कर एक पत्र आराधना को सौंपकर नमस्ते कहा और अपने कक्ष की ओर चली गई.

आराधना ने अपनी बहन मुस्कान के कहने पर बारहवीं के पश्चात संगीत विषय से स्नातक की परीक्षा में विश्वविद्यालय में स्वर्ण पदक प्रात करने के बाद संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षा प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण की. आराधना का चयन भारतीय विदेश सेवा के लिए हुआ. उसकी पहली ही नियुक्ति इण्डोनेशिया में भारतीय राजदूत के पद पर हुई, जिसका कार्यालय बाली द्वीप में है. यहाँ 80 प्रतिशत से अधिक भारतीय मूल के निवासियों की जनसंख्या है. यहाँ रहते हुए उसे एक वर्ष हो गया है. आराधना नियुक्ति के समय 25 वर्ष की थी अर्थात भारत की सबसे कम आयु की राजदूत.

आराधना ने पत्र खोलकर पढ़ा. इण्डोनेशिया सरकार द्वारा अंतरराष्ट्रीय संगीत प्रतियोगिता का आयोजन बाली द्वीप में किया जाना है. जिसमें भारत सहित विश्व के 108 देशों के संगीत कलाकार प्रतिनिधि प्रतिभागिता कर रहे हैं. जिसके लिए इण्डोनेशिया सरकार द्वारा तय की गई पाँच सदस्यीय निर्णायक समित में आराधना को संगीत कला कौशल में निपुण होने के कारण मुख्य निर्णायक चुना गया है.

आराधना ने पत्र पुनः लिफाफे में रखा. एक कर्मचारी को आदेश दिया कि वह अवंतिका से कहे कि वह इण्डोनेशिया सरकार के लिए पत्र-प्राप्ति एवं स्वीकृति पत्र आज ही मुझसे हस्ताक्षरित कराकर भेज दे.

-७-

प्रतियोगिता के कई दौर चले. अंततः प्रतियोगिता का आखिरी दौर आ ही गया. आराधना को अंतिम दौर की प्रतियोगिता में उपस्थित होना था. अंतिम दौर की प्रतियोगिता में इण्डोनेशिया, फिजी, मालदीव, मॉरिशस, अमेरिका, जापान, दुबई, ओमान, दक्षिण कोरिया तथा भारत सहित कुल दस देशों के मध्य निर्णायक मुकाबला होना था. भारत के विदेश सचिवालय से लगातार संपर्क किया जा रहा था. आज आराधना ने गुलाबी साड़ी पहनी है. माथे पर रोली की छोटी सी रक्ताभ बिंदी और हरे रंग की काँच की चूड़ियों ने सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं. आराधना ने कहा ‘अवंतिका! कितना समय शेष है?’ ‘महोदया! आपकी ही प्रतीक्षा हो रही है.’ अवंतिका ने कुछ दस्तावेज सँभालते हुए कहा. दोनों दूतावास से बाहर निकलीं. द्वार पर ही एक अत्याधुनिक तकनीक से सम्पन्न लम्बी सी मोटरकार प्रतीक्षा में थी. दस मिनट के मार्ग को तय करके आराधना कार्यक्रम स्थल पर पहुँच गई. खचाखच भरे विशालकाय इंडोर स्टेडियम में आराधना के स्वागत में सभी अपने स्थान पर खड़े हुए. आराधना ने भी अपना स्थान लिया. ठीक पीछे अवंतिका भी बैठी. प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई. क्रमशः सभी प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं. भारतीय प्रतिभागी के मंच पर आने की घोषणा के साथ ही पूरा स्टेडियम भारत माता की जय के नारों से गूँज उठा. अब तक के सभी दौरों में भारतीय प्रतिभागी सर्वाधिक अंकों के साथ पहले पायदान पर था. मंच पर आते ही मुख्य निर्णायक के स्थान पर बैठी आराधना को देखकर अरुण के पैरों तले जमीन न रही. मानो उस पर वज्रपात हो गया हो. सारा शरीर काँप रहा था. आवाज को मानो लकवा मार गया. अरुण की प्रस्तुति कैसी रही होगी इस बात का अनुमान उसकी स्थिति से ही लगाया जा सकता है. प्रतियोगिता पूर्ण हुई. चारों निर्णायकों ने अपने निर्णय आराधना को सोंप दिए. विजेता प्रतिभागी के निर्णय पर पेंच फँसा था. भारत और इण्डोनेशिया के प्रतिभागियों के अंक समान थे. अंतिम निर्णय आराधना को ही करना था. एक ओर मातृभूमि और दूसरी ओर कर्मभूमि. द्वंद के बीच फँसी आराधना के किंकर्तव्यविमूढ़ मन से उसका अपमानित प्रेम भी टकराकर कह रहा था कि यही अवसर है, अपने अपमान का बदला लेने का, चूक मत अनुराधा अन्यथा जीवनभर उस अपमान के विष में ही घुलती रहेग. अनुराधा ने

शेष पृष्ठ २६ पर...

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

लघु कथाएं वो समझदार बहू

शाम को गरमी थोड़ी थमी तो मैं पड़ोस में जाकर निशा के पास बैठ गई. उसकी सासू माँ कई दिनों से बीमार है. सोच खबर भी ले आऊँ और बैठ भी आऊँ. मेरे बैठे-बैठे उसकी तीनों देवरानियाँ भी आ गईं. ''अम्मा जी, कैसी हैं?'' शिष्टाचारवश पूछ कर इतमिनान से चाय-पानी पीने लगी. फिर एक-एक करके अम्माजी की बातें होने लगी. सिर्फ शिकायतें, ''जब मैं आई तो अम्माजी ने ऐसा कहा, वैसा कहा, ये किया, वो किया.'' आध घंटे बाद सब यह कहकर चली गईं कि उन्होंने शाम का खाना बनाना है. बच्चे इन्तजार कर रहे हैं. कोई भी अम्माजी के कमरे तक न गया. उनके जाने के बाद मैं निशा से पूछ बैठी, ''निशा अम्माजी, आज एक साल से बीमार हैं और तेरे ही पास हैं. तेरे मन में नहीं आता कि कोई और भी रखे या इनका काम करे, माँ तो सबकी है.'' उसका उत्तर सुनकर मैं तो जड़ सी हो गई. वह बोली, ''बहनजी, ये सात बच्चों की माँ है. इसने रात-रात भर गीला रहकर सबको पाला. ये जो आप देख रही हैं न मेरा घर, पति, बेटा, शानो-शौकत सब इसकी है. अपनी-अपनी समझ है. मैं तो सोचती हूँ इन्हें क्या-क्या खिला-पिला दूँ, कितना सुख दूँ, मेरा बेटा, इनका पोता सुबह-शाम इनके पास बैठता है, ये मुस्कराती है, इन्हें ठंडा पिलाता है तो दुआएँ देती हैं. जब मैं इनको नहलाती, खिलाती-पिलाती हूँ, तो जो संतुष्टि मेरे पति को मिलती है, देखकर मैं धन्य हो जाती हूँ और वह बड़े ही उत्साह से बोली, एक बात और है ये जहाँ भी रहेंगी, घर में खुशहाली ही रहेगी, ये तो मेरा तीसरा बच्चा बन चुकी हैं.'' और ये कहकर वो रो पड़ी. मैं इस जमाने में उसकी यह समझदारी देखकर हैरान थी और मन ही मन उसे सराह रही थी.

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि.प्र. 09816838909

आश्वस्ति

एक समारोह में हम दस-बारह लोग अलग से एक साथ बैठे थे. गपशप और हंसी-मज़ाक जारी था. बातचीत के दौरान जब मैंने बतलाया कि हम अगले महीने एलटीसी पर जा रहे हैं तो सबसे पहले विवेक ने अत्यंत उत्सुकता दिखलाते हुए पूछा, '' एलटीसी पर कहां जा रहे हो रवि?'' मैंने बतलाया कि पुरी जाने का कार्यक्रम है. ''कहां रुकोगे?'' विवेक का अगला प्रश्न था. मैंने कहा, ''किसी होटल में रुकेंगे और कहां?'' विवेक ने कहा कि होटल तो बहुत मंहगा पड़ेगा. गुस्सा तो बहुत आया विवेक की बात पर. क्या वही होटलों में ठहर सकता है? हम नहीं ठहर सकते? मैंने ज़रा तल्ख़ी से कहा, ''अब मंहगा-सस्ता जो भी पड़ेगा जाना तो है ही. वैसे कोई जबरदस्ती थोड़े ही भेज रहा है. हम अपनी मर्ज़ी से जा रहे हैं अपने मज़े के लिए. पैसे तो लगेंगे ही. पहले भी होटलों में ही रुकते रहे हैं. एलटीसी पर जाने वाली सारी दुनिया होटलों में ही रुकती है.''

कुछ सैकेंड चुप रहने के बाद विवेक ने कहा, ''अगर रहने की व्यवस्था मुफ़्त में करवा दूं तो?'' मैंने तनिक अविश्वास से कहा, ''ये तो बड़ी अच्छी बात है पर ये कैसे संभव है?'' विवेक ने कहा कि हमारे ऑफिस का गेस्ट हाउस है वहीं ठहर जाना. मैंने थोड़ा गुस्सा करते हुए कहा, ''यार विवेक तू बेकार की बातें बहुत करता है. तूने कह दिया और हम ठहर गए. मैं सरकारी नौकर तू सरकारी नौकर. दोनों के डिपार्टमेंट अलग-अलग. तू सेंट्रल गवर्नमेंट में और मैं स्टेट गवर्नमेंट में. हम कैसे ठहर सकते हैं तुम्हारे डिपार्टमेंट के गेस्ट हाउस में? वैसे भी अफसरों तक को तो मिलते नहीं गेस्ट हाउस तू हमें दिलवाएगा? विवेक ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, ''तुझे आम खाने से मतलब है कि पेड़ गिनने से? ये तो मैं देखूंगा कि कैसे ठहर सकते हैं.''

मैंने कहा कि यार विवेक ज़्यादा मत लपेट बहुत हो गया. मन ही मन कहा कि आया बड़ा गेस्ट हाउस दिलवाने वाला. कोई कलेक्टर नहीं लगा हुआ है तू. जानता हूं एक बाबू की औकात क्या होती है. तभी विवेक के चाचाजी ने हस्तक्षेप किया और मुझे घूरते हुए कहा, ''रवि तू किसी की बात पर विश्वास क्यों नहीं करता? जब रवि कह रहा है कि वो करवा देगा तो तू क्यों बहस कर रहा है? विवेक के ऑफिस के गेस्ट हाउस में नहीं जाना है तो अलग बात है. '' मैंने कहा, ''अंकल गेस्ट हाउस में न ठहरने की कौन सी बात है पर दूसरे डिपार्ट..'' चाचाजी ने मुझे बीच में ही रोककर कहा, ''फिर वही बात.'' मैंने कहा, ''चलो ठीक है मैं कुछ नहीं कहता. अलगे महीने की पंद्रह तारीख को जा रहे हैं. सत्रह को सुबह पहुंचेंगे. सत्रह से बीस तक रुकेंगे. चार दिन की बुकिंग करवा देना.''

एक महीने तक हर तीसरे दिन फोन करके बुकिंग की स्थिति पूछता रहा. विवेक का एक ही जवाब होता कि हो जाएगा. गाड़ी में चढ़ने से पहले कंफर्म करवा दूंगा. चौदह तारीख को फोन किया तो बतलाया कि इन तारीखों में कोई रूम खाली ही नहीं है. सब भरे हैं. फिर ज़ोर देकर कहा

कि पंद्रह दिन बाद पूरा गेस्ट हाउस खाली रहेगा. गाड़ी की पंद्रह दिन बाद की बुकिंग करवा ले. मैंने मना कर दिया और कहा कि हम कल ही जा रहे हैं. बुकिंग कैंसिल करवाने का प्रश्न ही नहीं उठता. वहां होटल कम हैं क्या? विवेक ने ज़ोर देकर कहा कि इस बार कोई अड़चन नहीं आएगी. भाई मेरा विश्वास कर. एक तरह से रिरियाने लगा. चलो देख लेते हैं विश्वास करके. मैंने वर्तमान बुकिंग कैंसिल करवा के पंद्रह दिन बाद की बुकिंग करवा ली. प्रस्थान से दो दिन पहले फोन किया तो विवेक ने कहा, ''सॉरी यार! आजकल दूसरे डिपार्टमेंट वालों के लिए बुकिंग बिल्कुल बंद कर रखी है.''

-सीताराम गुप्ता, पीतम पुरा, दिल्ली

घोषणा पत्र

चुनाव प्रचार अपने यौवन पर था. विपक्षी दल ने आज पार्टी कार्यालय में एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया था. पार्टी अध्यक्ष जब पत्रकारों को सम्बोधित करने लगे तो एक पत्रकार ने उनसे पूछ लिया-

''अध्यक्ष महादय जी, सत्तारूढ़ दल ने अपना चुनावी घोषणा-पत्र जारी कर दिया है. जब आप अपनी पार्टी का घोषणा-पत्र कब जारी कर रहे हैं?''

पत्रकार का यह प्रश्न सुनकर अध्यक्ष जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया-

''पत्रकार महोदय, हमें इसके जारी करने की क्या जरूरत है? जो वायदे सत्तारूढ़ दल ने अपने घोषणा-पत्र में किये हैं, वे सब हमारे ही तो हैं. हम इन वायदों को पूरा करेंगे. फिर भी जिन वायदों को सत्तारूढ़ दल ने छोड़ दिया, उन शेष वायदों को भी हमारी पार्टी पूरा करेगी. इसका मैं वचन देता हूँ.'' अध्यक्ष महोदय का यह जवाब सुनकर सभी पत्रकार सतब्ध रह गये.

टिकट

विधानसभा चुनावों की घोषणा हो चुकी थी. भ्रष्टाचार के एक मामले में धूमिल हुई छवि के कारण नेता जी को पार्टी हाई कमान ने टिकट देने से इंकार कर दिया था. इस बात को लेकर नेता जी काफी दुःखी दिखाई दे रहे थे.

अपनी आलीशान कोठी के ड्रांईग रूम में बैठे नेता जी इसी सोच-विचार में उलझे हुए थे कि पार्टी टिकट किस प्रकार हासिल किया जाये? तभी पास पड़े सोफे पर बैठी नेता जी की पत्नी ने सुझाव दिया कि आजकल सभी पार्टियां महिला आरक्षण पर जोर दे रही है. आपको टिकट नहीं मिल रहा है, तो दुःखी क्यों होते हो? इस आरक्षण के तहत पार्टी हाई कमान मुझे तो टिकट दे सकता है. मेरे पर तो भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है. मैं चुनाव लड़ लूंगी. सत्ता तो घर में ही रहेगी.

अपनी पत्नी की बात सुनकर नेता जी का चेहरा खिल उठा और उसने इस सुझाव से पार्टी हाई कमान को अवगत कराया. हाई कमान ने उसके सुझाव को स्वीकार कर नेता जी की पत्नी को टिकट देने की घोषणा कर दी.

-रोहित यादव,
सैदपुर, मंडी अटेली, हरियाणा

पृष्ठ 24 का शेष आराधना

आँखें बंद कीं, महावीर भगवान का स्मरण किया. तीन बार ऊँकार मंत्र दोहराया. हाथ में माइक थामकर कहा 'यद्यपि भारत और इण्डोनेशिया दोनों ही देशों के प्रतिभागियों को निर्णायकों ने समान अंक दिए हैं किन्तु किसी एक को विजेता घोषित करने की बाध्यता के चलते मेरा यह निर्णय है कि भारतीय प्रतिभागी श्रीमान अरुण जी की प्रस्तुति में आत्मविश्वास की कमी के चलते इण्डोनेशिया के प्रतिभागी श्रीमान प्रभंजन सुकुमार को इस अंतरराष्ट्रीय संगीत प्रतियोगिता का विजेता घोषित किया जाता है' आराधना की घोषणा के साथ ही स्टेडियम के बाहर गगनभेदी पटाखों की आवाज और प्रकाश दोनों एक साथ बिखरने लगे.

-८-

रात के दस बज चुके थे. समुद्र की लहरें शान्त, चारों ओर सन्नाटा. हल्की शीतल वायु कक्ष के रोशनदान के पर्दे को हिला रही थी. टेबल लैंप के प्रकाश में अपनी डायरी लिखती आराधना के मनोभावों में स्थिरता न थी. कुछ ही पलों में आराधना दसवीं की परीक्षा से बालीद्वीप की सम्पूर्ण यात्रा तय कर चुकी थी. अरुण का प्रकंपित स्वर और अट्टहास करता अपमानित एकनिष्ठ पवित्र प्रेम दृष्टि पटल पर कोलाहल कर रहा था. सहसा आराधना के दृगों से दो जलबिंदु कपोलों को गीला करते हुए डायरी के पन्ने पर जा बैठे. टेबल लैंप के प्रकाश में दोनों आँसू सीपी को त्यागकर निकले मोती से चमक रहे थे.

स्टार

–रजत कुमार,
भूड़, बरेली,उ०प्र०

दुनिया चमक-दमक-पद के पीछे दौड़ती. मगर इस झूठ तथा मायावी दुनिया की हकीकत दू:ख दर्द तनिक भी नहीं जानती. दुनिया रजत रेत का एक मरूस्थल बन गयी है. ये तो शीश महल बहुत बने मगर प्यासे को कोई एक घूँट पानी नहीं पिलाता. आज का विकास तो देखिये रजत आदमी रोटी नहीं सल्फ़ाज खा रहा. प्रिया एक जानी-मानी फिल्म स्टार तथा विश्व सुन्दरी भी है. हर समय तनाव, उधार भरी जिन्दगी. सड़कों पर घूम नहीं सकती. एक साधारण इन्सान की तरह हँसने, मुस्कराने, घूमने, जीने की तमन्ना लिए जीते जी मेरी जा रही.

दुनिया चमक-दमक के पीछे दौड़ती. मगर इस झूठ तथा मायावी दुनिया की हकीकत तनिक भी नहीं जानती. मैं फिल्मी दुनिया की जिन्दगी से ऊब चुकी हूँ. तनिक भी सकून शान्ति नहीं है. सब कुछ नकली है.

चन्द्रशेखर, आजाद भगत सिंह से सरीखे जवानों के पथ पर चलने वाले क्रान्तिकारी पर प्रिया मर मिटीं. उधर क्रान्तिकारी के मन में फिल्म बनाकर समाज सुधार की इच्छा बलवती हो रही. मगर फिल्म सम्बन्धी जानकारी व सहयोगी की उसे भी तलाश है. प्रिया ने क्रान्तिकारी को पत्र लिखा. मैं फिल्मी दुनिया की जिन्दगी से ऊब चुकी हूँ. तनिक भी सकून शान्ति नहीं है. सब कुछ नकली व पल भर का है. तनिक भी हकीकत नहीं है. क्रान्तिकारी हमारा तुम्हारा गृह नगर बरेली है. क्या तुम मेरे साथ बरेली में घूम सकते. क्रान्तिकारी तुम क्रान्तिकारी के साथ ब्रह्मचारी भी हो. मैं तुम्हारी भावनाओं की बहुत कद्र करती हूँ. पत्र उत्तर शीघ्र देना. ई-मेल कर देना. क्रान्तिकारी प्रिया के पत्र एक साधारण सा पत्र ही समझता. जैसे लाखों आम लड़कियाँ उसे लिखतीं. उसने प्रिया को उत्तर दिया. तुम मेरा ब्रह्मचर्य नहीं भंग कर सकती. तुम भले ही मेनका क्यों न हो. मगर मैं तपस्वी विश्वामित्र नहीं हूँ. मुझे तुम्हारे साथ बरेली की सड़कों पर घूमने में कोई आपत्ति नहीं है. मगर भारत की जनता कितनी मूर्ख, आयोग्य, जाहिल, स्वार्थी व निकम्मी हैं. इसी से आज हर शाख पर उल्लू बैठा है. जुबली कुमार बरेली साहूगोपी नाथ में एक मुशायरे में आए. मै! भी एक कवि के रूप कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ. कुमार जी को मेरी रचना व सूरत बहुत पसंद आयी. कुमार जी मेरी कहानी फिल्म बना रहे थे. उन्होंने मुझे नायक की भूमिका व गीत लिखने को आमंत्रित किया. मैंने कहा मुझे फिल्मी दुनिया में कोई भी दिलचस्पी नहीं है. दो साल बाद जुबली कुमार फिर बरेली आए. वह होटल आनन्द ओबेराय में ठहरे थे. वह मुझे नहीं भूले थे.

कुमार जी होटल के कर्मचारी से मुझे बुलाया. कुमार साहब ने आदेश दिया. क्रान्तिकारी किसी को मेरे आने की सूचना न दें.

क्रान्तिकारी कुमार जी से मिलने होटल जा रहे थे. रास्ते में एक मित्र मिल गये. बोले कहाँ जा रहे हैं? क्रान्तिकारी जी ने कहा जुबली कुमार ने बुलाया है. वह होटल आनन्द ओबेराय में है. मित्र आश्चर्य चकित. ऐसा हो सकता? मगर क्रान्तिकारी राजा हरिशचन्द्र से बड़ा सत्यवादी. मिस्टर क्रान्तिकारी होटल पहुँचते. इससे पहले ही लाखों का मजम लग गया. पुलिस आ गयी. तब भी भीड़ के तेवर नहीं बदले. मिस्टर क्रान्तिकारी बंद होते-होते बचे. वह तो जुबली कुमार ने आपात व गुप्त जीने से उन्हें बुलाया. इससे पूर्व भी बरेली आने से अनेक फिल्म स्टार तौबा कर गए. क्रिकेट स्टार अशोक ने भी क्रान्तिकारी को टीम इण्डिया में खेलने का न्यौता दिया. मगर उसने अस्वीकार कर दिया. उसने कहा- 'मैं देश में नैतिक क्रान्ति लाना चाहता. मैं लोगों की सेवा करूँगा. बच्चों में सुसंस्कार डालूँगा. क्रान्तिकारी ने अपना जीवन दुनिया की सेवा को समर्पित कर दिया. प्रति पल वह दुखियों, रोगियों की सेवा करता. बच्चों को पढ़ाता, खिलाता, अच्छी शिक्षा देता. रोगियों, वृद्धों की सेवा करता. कोई भी मर जाये. वह ही शव ढोता. वह सभी के दु:ख में शामिल होता. अपना तन, मन, धन, जीवन उसने देश और जनता को दे दिया. क्रान्तिकारी एक राजवंशीय चिराग था. दानवीर कर्ण सा दानी, रावण सा ज्ञानी, अर्जुन सा वीर, परशुराम सा ब्रह्मचारी था.

सारी रियासत उसने परोपकार के खातिर दान-पुण्य में लुटा दी. उसका गाँव बीजामऊ में एक तालाब भी था. जिसका पानी सारा गाँव, पशु पक्षी, जीव जन्तु सभी पीते थे. उस तालाब

की कीमत कई अरब हो गयी, जिसे भूमि माफिया, सरकार सभी हथियाना चाहते. मूल्य देकर खरीदना भी चाहते. मगर पूरा गाँव प्यासा मर जायेगा. सभी ने राजकुँवर के चरणों में धरना डाल दिया. बाबूजी आपके तालाब की आज भी कोई मछली न मार सकता. आपके पुरखों की शान, सम्मान आज भी जिन्दा है. क्रान्तिकारी तालाब गाँव को दान दिया. सत्ता, नौकरशाह, भूमि माफियाओं सभी को सदल-सबल शान्त किया. मगर गाँव का एक आदमी भी धन्यवाद कहने नहीं आया. डी. आई. जी. के. डी. शर्मा की लड़की सपना शर्मा ने तारा टाकीज के सामने कोठी बनायी. मुख्यमंत्री मुल्ला के आदमी ने स्वयं को अधिकारी बताकर कोठी ली. मगर जब सपना ने कोठी खाली करने को कहा. तब अधिकारी बने अपराधी बोले कोठी हमारी है. तुम्हारी कोठी के सामने तुमसे बलात्कार होगा. सारे परिवार की हत्या होगी. सपना क्रान्तिकारी के पास गयी. क्रान्तिकारी ने नजर उठाकर देखा भी नहीं. उसकी सारी फरियादी सुनी. क्रान्तिकारी ने कहा चाहे सी.एम. हो चाहे पी.एम. हो या उनके आदमी. कह देना हमें क्रान्तिकारी ने भेजा है. अपराधी चौबीस घण्टे में कोठी खाली कर गए. क्रान्तिकारी से कह गए. दूसरों का नहीं अपना भला करना सीखो. अब हमारे रास्ते में मत आना. सी.एम., पी.एम. सभी उसे पद, दौलत, मंत्री बनाना चाहते. मगर वह सभी पर ठोकर मार देता. क्रान्तिकारी सख्त बीमार है. उसे कोई देखने भी नहीं गया. इलाज न होने से उसने दम भी तोड़ दिया. पुलिस ने लावारिस लाश समझा. पैसा जेब में रखा. शव गंगा में फेका.

कुप्रथा

शादी एक सामाजिक प्रथा है लेकिन उससे जुड़ी दहेज प्रथा समाज का सबसे बड़ा कलंक है. यह कितनी बुरी प्रथा है हममें से ज्यादातर इस तरफ ध्यान ही नहीं देते. बेटी पैदा होते ही हर माता-पिता को यह चिंता होने लगती है कि उसके दहेज के लिए पैसा कैसे जोड़े? और वो अपनी छोटी-बड़ी सभी जरुरतों में, खुशियों में कटौती करने लगते हैं ताकि उनकी लाडली सुखी रह सके. क्योंकि जितना गुणी लड़का उतनी ऊँची उसकी बोली. क्यों क्या लड़की के पालन पोषण, पढाई में खर्च नहीं होता. हम अपनी मेहनत की कमाई का लाखों रुपये भी देते है और अपनी लाडली को एक ऐसे घर में भेज देते हैं जहां लोग अपने लिए इसलिए बहुत चाहते हैं क्योंकि बूढी मां काम नहीं होता. संक्षेप में लाखों रुपये खर्च करके हम एक ऐसा परिवार खरीदते हैं जो बेटी के मालिक बन जाते हैं. लड़की जाने दिन भर में ऐसा कितना काम करती है जिनमें मात्रा 2, 3 काम के नौकरानी हजारों रुपए ले लेती है. जिसकी कोई तनख्वाह तो छोड़ो उसके बदले आदर सम्मान तक नहीं मिलता. लोग जरासी तबीयत खराब होने पर ताना मारते हैं. महारानी जी को तो केवल बैठकर खाने का बहाना चाहिए तो क्या वो जीवन भर खा सके उतना पैसा उसके पिता ने नहीं चुकाया? इतना काफी नहीं है. कई लोग ज्यादा दहेज देने का दबाब डालते है. भले ही लड़की वालों को कर्ज ही क्यों न लेना पड़े. कुछ भार डालते हैं ताकि फिर नई बहु और नया दहेज आ सके. काश हम इस प्रथा में सुधार ला सकें. हम अपने समाज में ये नियम बना लें की लड़का हो या लड़की अपना सारा धन उनकी पढ़ाई में, और उनको सक्षम बनाने में लगाए और लड़के, लड़की की संयुक्त जिम्मेदारी बनाएं की वो भविष्य में अपने गृहस्थ जीवन के लिए मिलकर आवश्यक सामग्री जोड़े, मिलकर घर सजाएं और इस सुन्दर जीवन का आनन्द लें. इसके लिए हममें से कुछ लोग शुरुआत करें. कारवां अपने आप बनता जाएगा.

-शिखा भारती, शिक्षिका, नैनी, प्रयागराज, उ.प्र.

फिल्म स्टार, स्पोर्ट, राजनीतिक स्टार, अपराधी स्टार रो उठे. बोले क्रान्तिकारी तुम थे सच्चे स्टार. हम तो नकली स्टार हैं. हम तो मात्र अभिनय करते. तुमने तो यथार्थ जीवन जिया।.

-रजत कुमार बरेली, उ०प्र०

''कावाकल्प अमृत है, भवूर शिखा एवं पलांश''

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द
सीतारोड, चन्दौसी, संभल, उ०प्र०

हमारे भारत में प्राचीनवुग से ही वनौषधियों का प्रभाव एवं महात्म अद्भूत व चमत्कारिक सिद्ध रहा है. कितु खेद है कि देश की प्रजा जड़ी बूटियों के महात्मय को उपेक्षित कर आधुनिक ऐलौपैथि उपचार की तरफ भागे जा रहे हैं? यहां चर्चा करते है ऐसे ही अदभूत चमत्कारिक वनौषधि मयूरशिखा और पलांश (ढाक) के गुणों के बारे में. सर्वप्रथम वह वर्णन करना आवश्यक है- कि मयूर शिखा हि०प्र० के ऊंचे बर्फानी क्षेत्रों में और पलांश (ढाक) उत्तराखण्ड के पहाड़ी जगलों में बहुतायत पाया जाता है. मयूरशिखा का पौधा चार फुट ऊंचा और घना होता है. इसकी पत्तियां भोर पंख की तरह छितरी हुई होती है. अत्यन्त सुन्दर और सुगंधित होती हैं. इस पर कोई फूल या फल नही लगते, स्वाद फीका होता है. मयूर शिखा की चार प्रजातियां पाई जाती है. जिस पत्तेदार पंख के बीच मयूरपंख की तरह रंगीन छायाकषति बनी हुई होती है वही मयूरशिखा सर्वोत्तम है. शिमला से आगे 200 कि०मी० दूर एक पहाड़ी गांव 'पहासू' है, आवादी लगभग 10–12 हजार होगी, विशेषता वह है कि इस ग्राम क्षे० के लगभग सभी लोग दीर्घायू प्राप्त हैं. बहुत ही कम व्यक्ति होगें जिनकी मृत्यु 100 वर्ष के पूर्व हुई होगी? इसी गांव के वैध हिरामणी भाटिया जो वैध रामसुख शर्मा के शिष्य है ने बताया कि उनके गुरूजी पिछले 40 वर्षों से एक बूटी निरतर लोगों को निःशुल्क देते रहे है. वह मयूरशिखा ही है. उनके पूर्वजों को किसी महात्मा ने इस बूटी की पहचान कराई थी. इसके निरतर सेवन से मनुष्य निरोगी-स्वस्थ और दीघायू बना रहता है. इस मयूरशिखा बूटी के सेवन से मनुष्य जीवन में कभी बूढ़ा नही होता. यह एक दैविय अद्भूत चमत्कार है.

पौधे का तना मुट्ठीभर मोटा एक फिट बाहर निकला होता है. मोरपंख की तरह छतरी दार पंत्तियां होती है. जड़ में कचालू की तरह का दूधियां कद होता है, को 'मयूर कंद' कहा जाता है. इसी में आयू वर्धन का रहस्य छिपा है. शोध जांच अनुसंधान में यहां के किसी भी व्यक्ति में रोग के लक्षण नही पाये गये. (यह विदेशी स्वास्थ वैज्ञानिकों की घोषणा है)

पहासू गांव और उसके आस पास के क्षेत्र इस पौध की आध्यामिक महत्ता है, लोग श्रावण मास के प्रथम सोमवार को इस पौध को शिव स्वरूप मानकर पूजा करते हैं. यह परंपरा पहासू क्षेत्र में कई पीढ़ीयों से चली आ रही है. इसके अलावा महाशिव रात्री के दिन विधि विधान पूर्वक मयूर शिखा की पत्तियां घर लाते है, उनकी मान्यता है कि पौध को धर के आंगन में लगाने से धन सम्पत्ति का अभाव नही होता. खेती बाड़ी व्यवसाय आदि कुछ भी न होने के बावजूद यहां कोई दरिद्र निधर्न नही हैं, यह भी एक दैविय चमत्कार है.

वैद्य हिरामणी भाटिया से वार्तालाप में जानकारी प्राप्त हुई कि वे ऐसा रूढ़ी वादी परंपरा के कारण करते है. इससे अकाल मृत्यु नही होती न कोई रोग व्याधियों से ग्रसित होता है. इसलिए इस बूटी को बिना ग्राम प्रधान की अनुमति से तोड़ना दण्डनीय अपराध है. हि०प्र० सरकार ने भी इस अदभूत चमत्कारिक बूटी पर प्रतिबंध लगा रखा है. इन सारे रिति, रिवाज और मान्यताओं के पीछे मयूरशिखा की विशेषता ही स्पष्ट होती है. पहासू के शिव मंदिर के पुजारी श्री रामानन्द शर्मा शास्त्री जी के अनुसार मयूरशिखा अब तक इस लिए औषधि माफिया से बचा रहा कि यहां के लोगों में इस पौध पर अपार आस्था है. पौधे को काटना महापाप समझा जाता है. वहा की स्त्रियां इस पौध की पूजा करती है. वस्तुत मयूर शिखा अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ वनौषधि है. उन्होंने मयूर शिखा और मयूरकंद के गुणों के बारे में बताया कि-पत्तो का रस निकाल कर गजपूट से पका दें तो भस्म कायाकल्प अमृत बन जाता है. प्रतिदिन 05 रत्ति मधु (शहद) से सेवन करने से शरीर के समस्थ रोग नष्ट हो कर दीर्घायू जीवन प्राप्त होता है. (सेवन काल रोगियों के लिए केवल 15 दिन काफी है. बाद बुढापा के लक्षण समाप्त होने लगता है. नेत्र ज्योति बढ़ने लगता है. इसे पलांस अर्क योग के साथ प्रयोग करने से मनुष्यों को लगभग अमरता प्राप्त हो जाती है. योग प्रमाणिक एवं सिद्ध है. लोकोत्ति है ''प्रत्यक्ष की किसी प्रमाण की आवश्यकता नही होती.''

मयूर शिखा, पलाश, सेमलमूल, तुलसी मिक्षण कावाकल्प अमृत औषधि ऐसा अदभूत चमत्कारिक योग है, के उपयोग. सेवन से एड्स, कैंसर-श्वांस,

दमा, क्षय, प्रदर, आदि असाध्य रोगों को नष्ट कर शरीर को स्वस्थ हष्ट पुष्ट निरोगी बना कर दीर्घायू जीवन प्रदान करता है. इसके नियमित निरतर सेवन से वृद्धावस्था के लक्षण समाप्त हो जाते है. शोध अनुसंधान से यह प्रमाणित हो चुका है.

कायाकल्प अमृत सिरप निर्माण विधि : सर्वप्रथम कुम्हार के यहां से मिट्टी का मलसा (हांडी) लगभग तीन कि.ग्रा. जल का लाएं (हांडी अच्छी तरह पका हुआ हो) हांडी को गर्म जल से धोकर अन्दर दही हल्टी बेशन का लेप लगा कर सुखा लें, बाद पुनः गर्म जल से धोकर 200ग्राम मयूर शिखा पंचांग 100ग्राम पंलास की छाल या मूल 100ग्राम सेमल की जड़ 50ग्राम तुलसी पंचांग डाल जल इतना भरें की हांडी के तीन भाग भर जाए. ढक्कन (मिटटी का कसोरा) के बीच ताबें के डेढ़ फुट लम्बा पाइप (जैसा एकस्प्रेसो काफी मसीन में होता है) के आकार का फिट करवा दें. हांडी को चुल्हे में चढ़ा दें, पाइप के छोर पर कांच का पात्र (गिलास) रख दें. इतना उबाले कि जल चौथाई भाग बचे. कांच के पात्र में जितना अर्क बूंद-बूंद टपक कर संग्रह होगा. वह इंजेक्शन की औषधि बन जायगा, को एडस, कैंसर दमा के रोगी पर 02मि.ली. ड्रिस्ट्रील वाटर मिला प्रयोग किया जाता है. बाद हांडी के अर्क को छान कर उसमें समभाग शुद्ध शहद मिला बोतल भर के रख लें. सिरप तैयार है. प्रतिदिन 10मि.ग्रा. भोजन बाद सुबह शाम रोगी को सेवन कराने से समस्त प्रकार का रोग नष्ट होकर शरीर का कायाकल्प होता है. अवशेष फेके नही उसे पुनः दूसरे छोटे हांडी में रखकर ढक्कन लगा मिट्टी लेप से अच्छी तरह बंद कर गजपूट कर भस्म तैयार करें. (भस्म सफेद रंग का होगा) प्रतिदिन एक रत्ति भस्म शहद या दही के मलाई से सवेन करें.

कायाकल्प भस्म निर्माण विधिः मयूरशिखा पंचांग अर्क 400ग्रा. पलांस छाल या मूल अर्क 300 ग्रा. सेमलमूल अर्क 300ग्रा. सफेद मूसल अर्क 300 ग्रा. कौंच बीज गिरी रस (खरल कर छान के) 20ग्रा. तुलसी पंचांग अर्क 100ग्रा. उपरोक्त विधि से मिट्टी की हांडी में तब तक जलने दें जब तक हांडी के तल में सूखकर जमन जाये, बाद हांडी से खुरच कर खरल में आँवला अर्क की भावना देकर तब तक घौंटे जब तक सूख कर भूरभूरा न हो जायें कांच का पात्र भरकर रखें अमृत भस्म तैयार है. एक से दो रत्ति तक बलाबल अनुसार भोजनोपर्यान्त मधु से प्रयोग करें. दीर्घायू स्वस्थ जीवन के लिए अमृत है. इससे सभी प्रकार के रोग नष्ट होते हैं. वस्तुत यह कायाकल्प अमृत औषधि है, सीमित मात्रा में सेवन करने मात्र से लगभग दो महिने में शरीर की-वृद्धा अवस्था की तमाम झुररियां नष्ट होकर शरीर कांति मय होने लगता है. वृद्धावस्था के चिन्ह मिट जाते है.

फलांस के अदभूत गुण : प्लासमूर्लार्क को भाष्प प्रकष्या से उपरोक्त दशाएं गये तरिके से इंजेकशन औषधि में परिवर्तित कर गुलाब जल समभाग मिला आई. ड्रप्स तैयार करें, यह ड्रप्स हल्का गुलाबी रंग का होगा, नित्य नेत्र में दो बूंद डालने से फूला-माड़ा जाला मोतियाबिंद, काला मोतिया बिंद स्वत कटकर निकल जाता है. चस्मा उतर कर नेत्र ज्योति बढ़ जाती है. समस्थ नेत्र विकार नष्ट हो जाते हैं. मधुमेह रोगी प्रतिदिन 10एम.एल. पलांश अर्क दही के साथ सेवन करने से मधुमेह रोग समाप्त होता है. पलांश अर्क कामशक्ति वर्धक भी है. ध्वज भंग शिघ्रपतन स्वप्नदोष-नपुष्कता के रोगियों को सिद्ध मकर ध्वज बंसत कुशमाकर भस्म एक रत्ति मधु के साथ पलाश अर्क 10मि.ग्रा. सेवन करने से दोष समाप्त होता है. अर्क कांच यंत्र द्वारा ही निकालें तो सर्वोत्तम होगा. चार बूंद अर्क पान बीड़ा में डाल भोजन के एक घंटे बाद पान चबाए पीक बाहर न थूकें. क्षुधावृद्धि होकर शरीर कामशक्ति की वृद्धि होती है. कायाकल्प अमृत भस्म का सेवन साथ में जरूर करें.

पलांश मूल छाया शुष्क करके बारिक चूर्ण तैयार करें तीन ग्रा० चूर्ण गऊ वत मिश्री के साथ सेवन से बंद मासिक धर्म खुल कर बन्धत्व समाप्त होता है. सन्तान की प्राप्ति होती है. मधु में सेवन से पूराना बांझपन नष्ट होता है. मर्द में पुरूषत्व की प्राप्ति होती है. (सन्तान विहिन लोग प्रयोग कर देखे) साथ में हमारे द्वारा सन्तान उत्पत्ति 'दिव्य अमृत योग' भी लेना आवश्यक है.

मधुमेह जनित ध्वजभंग नपुष्कता, काम शक्ति दुर्बलता से पीड़ित रोगी 'कायाकल्प अमृत चूर्ण' के साथ पुराने हरे मोटे पलांश वृक्ष के मूल के नीचे एक फिट गहरा गढढा खोद जड़ को तिरछा काट मिट्टी का छोटा मलसा (हांडी रख दें जिसमें अर्क बूंद-बूंद गिरे एक नली मूल से सटाकर मलसे को भलिभांति बंद कर दे (धूल मिट्टी न जाने पाए) मलसे के चारो तरफ उपलो (कण्डों) से ढक कर आग लगा दे. इस प्रकार कि मलसे में हल्की आंच बारह घंटे तक लगें. अर्क छान कर कांच की बोतल में सुरक्षित कर ले. मात्रा चार बूंद अर्क मधु 20ग्राम में चूर्ण के साथ

शेष पृष्ठ ३२ पर.....

समीक्षा

आचार्य भगवत दुबे प्रणीत दोहा संग्रह 'कोरोना विकराल' के बहाने

-डॉ० कौशलेन्द्र पाण्डेय

समीक्ष्य है देश के बहुविश्रुत कवि जबलपुरवासी आचार्य भगवत दुबे की काव्य कृति 'कोरोना विकराल'. इससे पूर्व के इनके अनेक दोहा संग्रह, काव्य कृतियों सहित दधीचि संज्ञापित एक महाकाव्य तथा अन्यान्य विविध कृतियां है.

कृतिकार ने 'अपनी बात' शीर्षकीय पुरोवाक के अतर्गत दोहा छंद के प्रति स्वयं की विशिष्ट अनुरक्ति के मूल में जो तर्क दिए वे संतोषजनक है. कहते है : 'अपभ्रंश काल का अत्यंत लोकप्रिय छंद दोहा ही रहा था. इसकी पुरातनता के प्रमाण हमें महाकवि कालिदास के अपभ्रंश काव्य में मिलते हैं. ग्राम्यांचलों की पगडण्डियों, चौपालों, खेत-खलिहानों और वानस्थलिक जनपदों से लेकर राजपथों तकक का सूक्ति सहचर यह छंद लोकरंजन का महत्वपूर्ण साधन तो रही ही, पथ प्रदर्शक के रुप में भी यही दिशा-संघान भी कराता था... मध्यकाल में तो इस छंद की तूती बोलती थी. कृतिकार कके ही शब्दों में-'मध्यकाल का सूरमा-दोहा काव्य-किरीट. धुरंधरों की गोटियां पल में देता पीट. श्रीराम चरित मानस में तो आद्योपानत इसी ने मूल कथानक को गति दी, नये-नये प्रकरणों को समायोजित करके ग्रन्थ को समापन के चरम तक पहुंचाया. अलबत्ता इस प्रक्रमम में सोरठे वाले कतिपय संस्कृत के छंदो ने भी काफी हद तक अपना योगदान किया. चन्द्रगुपत विक्रमादित्य के शासन काल में उनके नवरत्नों में चमत्कारी वैदुष्य सम्पन्न सुकवि कालिदास सिंहल नरेश के आमंत्रण पर उनके दरबार पहुंचे थे. बहुविध समाहत भी हुये वह, सिंहल नरेश ने उनकी अहर्निश देखरेख के लिए सर्वगुण एवं शीर्ष व्यक्तित्व सम्पन्न परिचायिका नियुक्त कर रखी थी-लिखित रुप में उसने विशिष्टतम भारतीय अतिथि से अनुरोध किया. काव्यपंक्ति 'कमले कमलोत्पतिः श्रूयते न तु दृश्यते' की पूरक पंक्ति सुलभ कराने के लिए.

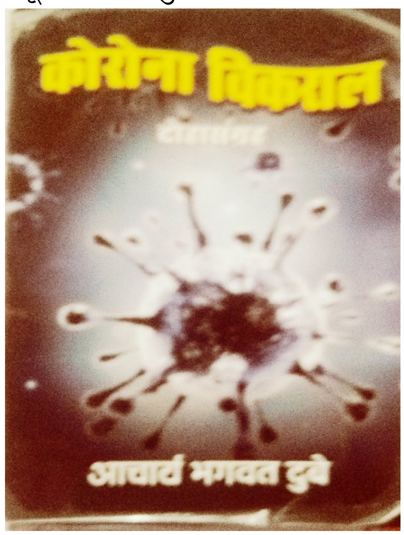

त्वरितरूपेण इन्होंने उसे सटीक पूरक पंक्ति सुलभ करा दी-'बाले! तब मुखाब्बोजे कत इन्दीवर द्वयम्!' विलक्षणता की मिसाल उस परिचारिका के निमित्त ऐसा अकल्पनीय मूल्यांकन पुलक-पूरित भी था-अभूतपूर्व और ऐतिहासिक महल वाला भी.

हम पृथ्वीवासी विश्व के किसी भी कोने में कहीं न कहीं आने भूकम्प, ज्वालामुखी-तूफान, सुनामी, अतिवर्षा, बाढ़ अथवा बादल फटने जैसी प्राकृतिक आपदाओं के काफी कुद अभ्यस्त हो ही चुके थे, किन्तु विगत कुद काल से चीन के वुहान शहर से तकरीबन सम्पूर्ण विश्व को निगल जाने के लिए अधीर कोरोना तथा उसकी विकरालता का ठीक-ठीक अनुमान ही नहीं कर पाये बात की बात में चीन समेत इससे इटली, अमरीका, स्पेन, फ्रांस, रूस, ब्राजील, भारत जैसे बहुतेरे समृद्ध और सम्पन्न देशों को भी अपनी चपेट में ले लिया. सर्वथा अनामंत्रित इस दुष्टा से विमुक्ति के लिए हम कटिबद्ध हो गये. शासन-प्रशासन के स्तर से सभी के संज्ञान में लाये जाने लगा कि क्या है...कैसे पहचाना जाये इसे, अनुभव सम्पन्न किसी चिकित्सक से मशविरा किया जाय, या फिर किसी हकीम से. 'कोरोना विकराल' के संवेदनशील रचयिता दुबे जी को या तो टेलीविजन की मार्फत प्रामाणिक मान्यतायें/जानकारियां समझ में आई या फिर आहरित किया उन्होंने हम उमर भुक्त भोगियों से. सर्वश्री अश्वनी कुमार पाठक, हरेराम 'समीप', श्याम मनोहर शिरोठिया जय प्रकाश पाण्डेय प्रभृति स्थानीय लेखन धर्मियों की प्रेरणा से किंचिस्मान वक्त खोये बिना पांच सौ दस दोहे रच डाले, रुचि प्रिंटर्स ने भी विषय की वैश्विक उपादेयता की दृष्टि से अपनी भूमिका का यथा विधि निष्पादन किया, जनसहयोग भावना से पृष्ठ-तीन की सजावट से ही सुस्पष्ट है. कृतिकार के मनस्ताप को नापने के लिए थर्मामीटर जैसे किसी विशिष्ट यंत्र की आवश्यकता नहीं-उसका प्रतिनिधित्व करने के निमित्त कविश्रेष्ठ की लेखनी अहर्निश रोई है-सुस्पष्ट है जो इनकी ही शब्द सम्पदा से. यथा

'इटली रूस, ब्रिटेन में कोविद हुआ प्रचण्ड.
अमरीका का कर दिया इसने चूर घमण्ड।

अमरिका में हो गये बीस लाख के पार
इटली रूस ब्रिटेन भी रहे रोग से हार।।
बड़े-बड़े जो देश थे वैभव से सम्पन्न।
कोरोना के सामने हैं असहाय विपन्न।।
समान रूप से सुकवि संवेछित रहे हैं स्वदेशान्तर्गत फल फूल रही अनेकानेक अपस्थितियों के अनियंत्रण से. यथा.
महाराष्ट्र के है अभी बहुत बुरे हालात्।
कोरोना से युद्ध में दूर रखे जज़्बात।।
साम्यवाद को कर रहा कोरोना साकार
मरते धनी गरीब सब सबकी एक कतार।।
सचिवालय तक जा घुसा यह कोरोना ब्याल।।
बचे वॉयरस से नहीं धरती नभ पाताल।।
हुए राष्ट्राध्यक्ष तक कोरोना से ग्रस्त
किये सभी के हौसले कोरोना ने पस्त।।
बचे वायरस से नहीं धरती नभ पाताल
वायुयान में चढ़ गया कोविड जंजाल।।
खाते-कुत्ते-बिल्लियां चमगादड़ का मांस
घात लगाकर वायरस छीनें इनकी सांस।।
अब तक तो विज्ञान भी दिखता है असहाय
अपने बस में है यही संयम एक उपाय।।
लम्बी डग भरने लगा कोरोना का प्रेत
छोड़ो लापरवाहियां, सम्हलो रहो सचेत।।
दोहा 508 से सलाह है कि हम सभी साहस संजोये रहें क्योंकि कोई भी युद्ध कभी भी उसी व्यक्ति या समुदाय ने जीता है जो जीवट भी हो और जुझारु होने के साथ-साथ समष्टि हितोपयोगी लड़ाई लड़े. विश्व के लगभग एक दर्जन देश मानवता के प्रति राक्षसी प्रकृति वाली कलियुग की इस महादेवी के रोष-शमन के लिए कोई वैक्सीन अन्वेषित करने में संलग्न है ही. अवश्यंभावी है इन्हीं में से कोई न कोई अपेक्षितत ख्याति का स्वामी आठवें दशक के अंतिम पावदान पर आसीन सरस्वती पुत्र आचार्य करके हौसले को आत्मसात करना होगा.... अक्षरशः जो इस प्रकार है-

कोविड है हत्यारा, दुनिया भर में इसने लाखों को है मारा।/यदि बचके रह पाये/ हो रोगी से दूरी/तो चेन तोड़ पाये।/यदि मास्क लगायेंगे-रोगी से दूर रहें/-तब ही बच पायेंगे दुर्दिन भी बीतेंगे, हारेगा कोरोना, इक दिन हम जीतेंगे।।

—130, मारुतिपुरम, लखनऊ-222616, उ.प्र.

कावाकल्प अमृत है...पृष्ठ ३० का शेष, भोजनोपर्यान्त सेवन करे. अत्यन्त ही कामशक्ति एवं वीर्यवर्धक फार्मूला है. पुरूषत्व वापस लौट आता है. स्तंमन शक्ति बढ़ती है. फार्मूला अत्यन्त ही चमत्कारिक है. इसके नियमित प्रयोग से मधुमेह और मधुमेह जनित प्रमेह रोग समूल नष्ट होता है.

असाहय मधुमेह रोग हेतू : सूर्योदय से पूर्व उपरोक्तानुसार बनाई गई पलांश अर्क 500ग्रा. में एक टी फाईट स्प्रीट समभाग मिक्षण कर कांच के बोतल में रखें अर्क का रंग हल्का सुन्हरा गुलाबी आभा युक्त होगा. एक से पांच बूंद तक ताजा जल में सेवन से पूराना मधुमेह रोग नष्ट होकर नवजीवन प्राप्त होता है. साथ कायाकल्प अमष्त भस्म 1/2 रत्ति दूध मलाई में जरूर लें.

गर्भास्राव-गर्भपात एवं गर्भाशल में : पलांश मूल का ताजा अर्क 05 से 10 बूंद तक मिश्रीयुक्त दूध में नौ महिना तक नित्य सेवन से समस्वाए समाप्त होकर गर्भपुष्ट होता है. प्रसव सुखपूर्वक होता है। (छठे माह के बाद पुरूष रति कुपा बंद रखे, अन्यथा बालक विकृत-अपंग पैदा होगा)

आयूवर्धक योग : डपरोक्त पद्धति से सुद्ध किये मिट्टी के दो कि०ग्रा माफ के पक्के मलसे (हांडी) में एक कि.ग्रा. छोटा देशी आँवला (गुठली निकला हुआ) 500 ग्रा. मुन्नका 100 ग्रा बादाम गिरी (छिलका उतरा और बारिक मसला हुआ 200ग्रा. कगदी नीबू (दो फाक कर बीज निकला हुआ) सेंधा नमक 10ग्रा. दाल चीनी 10 ग्रा. बारिक पिसा हुआ 200ग्रा. केवल तुलसी पत्ता, 200मि.ली. बराण्डी उत्तम प्रकार का 500ग्रा. पलांश के फूल भर कर मलसे को चिकनी मिट्टी से अच्छी प्रकार बंद करके गोबर के ढेर से 25 दिन तक गाड दें. बाद में निकाल कर हांडी के चारो तरफ आरने उपले से घेर कर आग जला दे. ढक्कन में छेद जरूर करदे अन्यथा हांडी फट जायगा. चाहे तो छेद में तांबे का पाइप लगा कर अर्क बूद भी संग्रह कर सकते है. सभी औषधिया गल कर गाढ़ा अवलेह बन जायगा यह 'अमृत रसायन' है.इस लुग्दी को 05ग्रा. गऊ घृत या मधु से यथेष्ठ नित्य सेवन करें. चाहे तो स्वाद के लिए समभाग शहद भी मिक्षण कर सकते है (ध्यान रखे शहद शुद्ध असली होना चाहिए अन्यथा औषधि सड़कर बदबू देने लगेगा) 60 दिन विधि पूर्वक 'अमृत रसायन' के सेवन से शरीर हष्टपुष्ट होने लगता है नई शक्ति का संचार होता है, बुढापे के लक्षण समाप्त होते है. नेत्र ज्योति बढ़ती है शरीर के सभी रोगाणू नष्ट होते है. आयुवृद्धि होती है. सेवन काल में खटाई-अधिक मिठाई धुर्म पान-दारू शराब का परहेज करना आवश्यक है. गऊ दूध मट्ठा का सेवन कर सकते है. मिलावटी तेल से बने खाध पदार्थों से परहेज करना चाहिए जहां तक संभव है गेहूं-चना मक्का और सोयाबीन आटे की रोटी उत्तम लाभकारी है.

-गणेश कालोनी स्ट्रीट नं० ३, बृजनगर, सीतारोड, चन्दौसी-१२, संभल, उ०प्र०

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1&20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः** पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान, बचपना सम्मान

2&20 ls 40 **वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री

3–40 **वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि

4-**सभी आयु वर्ग के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री**

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करेंः

अंतिम तिथिः 15 fnlEcj 2020

lafdz dk;ky;%

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

अनिल चक्की के सामने, लक्सों कंपनी के पहले, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड,

मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com,

hindiseva15@gmail.com, 9335155949

कोरोना लाक डाउन में अपने पड़ोसियों का ध्यान अवश्य रखें. अगर कोई हमारा पड़ोसी भूखे सोया तो हमारा मानव धर्म हमें धिक्कारेगा।

&विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जनहित में जारी

तृतीय लघु कथा प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5000/रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौं) शब्दों से अधिक की न हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkbZ,u 0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०ः
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।